आवश्यक निवेदन

इस सातवें एडिशन में हमने तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठवें छापे की कुल त्रुटियाँ और पाठ भेद निकाल दिये हैं और जो जो विषय उत्तराखंड (ततिम्मे) की तरह तीसरे छापे में अलग छपे थे उन्हें भी उचित स्थान पर छाप दिया है।

सूचना

भक्तजनों से प्रार्थना है कि सन्तों की असली फ़ोटो या तस्वीर मिल सकें तो इस पते पर पत्र-व्यवहार करें—

उन तस्वीरों की जाँच करने पर असली होने से अवश्य छापी जावेंगी तथा उन सज्जन का नाम और पता भी छापा जावेगा—

मैनेजर

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सहजो बाई का जीवन-चरित्र

सहजो बाई राजपूताना के एक प्रतिष्ठित ढूसर कुल की स्त्री थीं जो परम भक्त हुईं और संत मत के अनुसार साध गति को प्राप्त हुईं। इन का जीवन-चरित्र हम ने भक्त-माल और उस प्रकार की कई पुस्तकों में ढूंढ़ा परन्तु कहीं कुछ प्रमाणिक वृत्तान्त न पाया। उनकी बानी से इतना निश्चय होता है कि वह सम्वत् १८०० में वर्त्तमान थीं और प्रसिद्ध महात्मा चरन-दासजी की गुरुमुख चेली थीं जो आप भी मेवात के एक ढूसर कुल में प्रगट हुए थे और जिन के अनुयायी भारतवर्ष के देश-देशान्तर में अब तक हज़ारों हैं, यद्यपि उन में शब्द अभ्यासी और भेदी विरले देख पड़ते हैं। सहजो बाई की बानी से चरन-दासजी[1] के जन्म का समय भादों सुदी ३ मंगलवार संवत् १७६० विक्रमी प्रमान होता है।

सहजो बाई के विषय में कोई कोई चमत्कार के कौतुक प्रसिद्ध हैं परन्तु चूँकि उनका कहीं प्रमान नहीं मिलता यहाँ लिखना उचित नहीं है। उनकी गहरी गुरुभक्ति और गति उनकी अति कोमल, मधुर और हृदयबेधक बानी से जानी जा सकती है।

दयाबाई (जिन की कोमल और मधुर बानी अलग छपी है) सहजो बाई की सजाती और गुरु-बहिन थीं।

अधम, एडिटर संतबानी पुस्तक माला।

---

(१) इनकी बानी भाग १ मूल्य १—), भाग २ मूल्य १—) बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से मँगाइए।

आवश्यक निवेदन

इस सातवें एडिशन में हमने तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठवें छापे की कुल त्रुटियाँ और पाठ भेद निकाल दिये हैं और जो जो विषय उत्तराखंड (ततिम्मे) की तरह तीसरे छापे में अलग छपे थे उन्हें भी उचित स्थान पर छाप दिया है।

सूचना

भक्तजनों से प्रार्थना है कि सन्तों की असली फ़ोटो या तस्वीर मिल सकें तो इस पते पर पत्र-व्यवहार करें—

उन तस्वीरों की जाँच करने पर असली होने से अवश्य छापी जावेंगी तथा उन सज्जन का नाम और पता भी छापा जावेगा—

मैनेजर

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सहजो बाई का जीवन-चरित्र

सहजो बाई राजपूताना के एक प्रतिष्ठित ढूसर कुल की स्त्री थीं जो परम भक्त हुईं और संत मत के अनुसार साध गति को प्राप्त हुईं। इन का जीवन-चरित्र हम ने भक्त-माल और उस प्रकार की कई पुस्तकों में ढूंढा परन्तु कहीं कुछ प्रमाणिक वृत्तान्त न पाया। उनकी बानी से इतना निश्चय होता है कि वह सम्वत् १८०० में वर्तमान थीं और प्रसिद्ध महात्मा चरनदासजी की गुरुमुख चेली थीं जो आप भी मेवात के एक ढूसर कुल में प्रगट हुए थे और जिन के अनुयायी भारतवर्ष के देश-देशान्तर में अब तक हज़ारों हैं, यद्यपि उन में शब्द अभ्यासी और भेदी बिरले देख पड़ते हैं। सहजो बाई की बानी से चरनदासजी[1] के जन्म का समय भादों सुदी ३ मंगलवार संवत् १७६० विक्रमी प्रमान होता है।

सहजो बाई के विषय में कोई कोई चमत्कार के कौतुक प्रसिद्ध हैं परन्तु चूँकि उनका कहीं प्रमान नही मिलता यहाँ लिखना उचित नहीं है। उनकी गहरी गुरुभक्ति और गति उनकी अति कोमल, मधुर और हृदयबेधक बानी से जानी जा सकती है।

दयाबाई (जिन की कोमल और मधुर बानी अलग छपी है) सहजो बाई की सजाती और गुर-बहिन थीं।

अधम, एडिटर संतबानी पुस्तक माला।

---

(१) इनकी बानी भाग १ मूल्य १–), भाग २ मूल्य १–) बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से मँगाइए।

॥ सूचीपत्र ॥

सहजो बाई का

सहज प्रकाश ।

सतगुरु महिमा का अंग

॥ दोहा ॥

कर जोरूँ परनाम करि, धरूँ चरन पर सीस ।
दादा गुरु सुकदेव जी, पूरन बिस्वा बीस ॥१॥
परमहंस तारन तरन, गुरु देवन गुरु देव ।
अनुभै बानी दीजिये, सहजो पावै भेव ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो गुरु देवन देवा । नमो नमो गुरु अगम अभेवा ॥
नमो नमो निरलम्भ निरासा । नमो नमो परमातम बासा ॥
नमो नमो त्रिभुवन के स्वामी । नमो नमो गुरु अंतरजामी ॥
नमो नमो गुरु पातक हरता । नमो नमो पारायन करता ॥
गति मति छाके आनँद रूपा । नमो नमो गुरु ब्रह्म सरूपा ॥
नमो नमो मम प्रान पियारे । नमो नमो निर्गुन तें न्यारे ॥
भक्ती ज्ञान जोग के राजा । सहजो के पुरवो सब काजा ॥
जो कोइ सरन तुम्हारी आयौ । तुरियातीत बिज्ञान बसायौ ॥३॥

॥ दोहा ॥

निर्मल आनँद देत हौ, ब्रह्म रूप करि देत ।
जीव रूप की आपदा, ब्याधा सब हरि लेत ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो सुकदेव गुसाईं । प्रगट करी भक्ती जग माहीं ॥
श्रीमतभागवत् भानु प्रकासा । पढ़ सुनि कटै तिमिर की फाँसा ॥
ज्ञान जोग की नौका कीन्ही । चरनदास केवट को दीन्ही ॥
बहुतक पापी जीव चढ़ाये । भवसागर सूँ पार लँघाये ॥
किरपा बल्ली हाथ में राखैं । काहू तें दुरबचन न भाखैं ॥
अमृत बचन बोलि बैठावैं । नर नारी लौं पतित तिरावैं ॥
कलिजुग में सतजुग बिस्तारा । राम भक्ति का खोल दुवारा ॥
सुनि सुनि कै जिज्ञासू आवैं । उनहूँ के सन्देह मिटावैं ॥५॥

॥ दोहा ॥

गुरु हैं चार प्रकार के, अपने अपने अंग ।
गुरु पारस दीपक गुरू, मलयागिरि गुरु भृंग ॥ ६ ॥
चरनदास समरथ गुरू, सर्ब अंग तेहि माहिं ।
जैसे कूँ तैसा मिले, रीता छाड़ै नाहिं ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

लोहे कूँ पारस होय लागैं । कंचन करैं बेर नहिं ताकैं ॥
सिष पलास चन्दन करि डारैं । मलयागिरि ह्वै कारज सारैं ॥
सिष समान कीट के आवैं । भृंगी ह्वैकर ताहि बनावैं ॥
करै भिरिंगी ढील न कोई । पलटै रूप पाछलो सोई ॥
बिना लोय[1] दीपक सिष परसैं । ह्वै दीपक तिनहूँ कूँ दरसैं ॥
बकसैं अपनी जोति उजारा । होय चाँदना भवन मँझारा ॥
चरनदास गुरु समरथ ऐसे । सहजो बाई भाखत जैसे ॥
सब गति सब अँग है उन माहीं । उनतें भेद छिप्यो कोइ नाहीं ॥८॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान भक्ति अरु जोग का, घट लेवै पहिचान ।
जैसी जा की बुद्धि है, सोई बतावैं ध्यान ॥ ६ ॥

---

(१) लौ ।

॥ चौपाई ॥

आप सबन में सब तें न्यारे। चार बुद्धि के मनुष सँवारे ॥
प्रथम बुद्धि जल-लीक खिंचाई। खिंजती जाय सोई मिटि जाई ॥
दूजो बुद्धि लीक रस्ते की। चलै मनोरथ मिटै हिये की ॥
तीजी बुद्धि पाहन की रेखा। घटै सही पर बढ़ै न नेका ॥
चौथी तेल बूँद जल माहीं। फैलत फैलत फैलत जाहीं ॥
छोटी से दीरघ परकासै। बरन बरन के रंग निकासै ॥
तीन बुद्धि जग में दरसावै। चौथी बुधि कोई बिर्ले पावै ॥
सहजो बुद्धि सब थोथी कहिये। गुरु की कृपा सबन में चहिये ॥१०॥

हरि तैं गुरु की विशेषता

॥ दोहा ॥

हरि किरपा जो होय तो, नाहीं होय तो नाहिं।
पै गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिं ॥११॥

॥ चौपाई ॥

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ। गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ ॥
हरि ने जन्म दियो जग माहीं। गुरु ने आवागवन छुटाहीं ॥
हरि ने पाँच चोर दिये साथा। गुरु ने लई छुटाय अनाथा ॥
हरि ने कुटुँब जाल में गेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी[1] ॥
हरि ने रोग भोग उरझायो। गुरु जोगी कर सबै छुटायो ॥
हरि ने कर्म भर्म भरमायो। गुरु ने आतम रूप लखायो ॥
हरि ने मो सूँ आप छिपायो। गुरु दीपक दै ताहि दिखायो ॥

---

(१) बेड़ी।

फिर हरिबंधमुक्ति[२] गति लाये। गुरु ने सबही भर्म मिटाये॥
चरनदास पर तन मन वारूँ। गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारूँ॥१२॥

॥ दोहा ॥

सब परवत स्याही करूँ, घोलूँ समुंदर जाय।
धरती का कागद करूँ, गुरु अस्तुति न समाय॥१३॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की अस्तुति कहँ लौं कीजै। बदला कहा गुरू कूँ दीजै॥
गुरु का बदला दिया न जाई। मन में उपजत है सकुचाई॥
इन नैनन जिन राम दिखाये। बंधन कोटि काटि मुक्ताये॥
अभय दान दीनन कूँ दीन्हे। देखत आप सरीखे कीन्हे॥
गुरु की किरपा अपरम्पारै। गुन गावत मम रसना हारै॥
सेस सहस मुख निस दिन गावै। गुरु अस्तुतिका अन्त न पावै॥
मौन गहूँ अस्तुति कहा करऊँ। बार बार चरनन सिर धरऊँ॥
चरनदास महिमा अधिकाई। सर्ब सवारै सहजो बाई॥१४॥

गुरु मारग

॥ दोहा ॥

गुरु मग दृढ़ पग राखिये, डिगमिग डिगमिग छाँड।
सहजो टेक टरै नहीं, सूर सती ज्यों माँड॥१५॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के प्रेम पन्थ सिर दीजै। आगा पीछा कबहुँ न कीजै॥
गुरु के पन्थ होय सो होई। मारग आन चलौ मत कोई॥

---

(२) ऐसी मुक्ति जिसमें झीनी माया का बन्धन लगा रहता है।

गुरु के पन्थ पैज[१] का पूरा। गुरु के पन्थ चलै सो सूरा ॥
गुरु के पन्थ चलै सो ज़ोधा। गुरु के पन्थ चलै का बोदा ॥
गुरु के पन्थ नहीं ठग लागै। गुरु के पन्थ कपट भय भागै ॥
गुरु के पन्थ मुक्ति उजियारा। गुरु के पन्थ नहीं संसारा ॥
गुरु के पन्थ मिटै दुख दोई। गुरु के पन्थ महा सुख होई ॥
चरनदास को पन्थ दुहेला। गुरुमुख चालै ताहि सुहेला ॥
गुरु के पन्थ चलै सतवादी। सहजो पावै भेद अनादी ॥१६॥

गुरु चरन

॥ दोहा ॥

अठ सठ तीरथ गुरु चरन, परबी होत अखंड।
सहजो ऐसा धाम नहिँ, सकल अंड ब्रह्मंड ॥ १७ ॥
सब तीरथ गुरु के चरन, नित ही परबी होय।
सहजो चरनोदक लिये, पाप रहत नहिँ कोय ॥ १८ ॥

॥ चौपाई ॥

सब तीरथ गुरु चरनन लारे। चरन बर्त दृढ़ सदा हमारे ॥
चरन कँवल की निसदिन पूजा। परसुँ और देव नहिँ दूजा ॥
इष्ट हमारे गुरु के चरना। गुरु के चरन ध्यान हूँ करना ॥
गुरु के चरन लगे सो तारे। गुरु के चरन प्रान सूँ प्यारे ॥
आसा मनसा और कर मना। गुरु के चरन प्रेम चित धरना ॥
गुरु के चरन होय सो होना। हानि लाभ कै दुख सुख मरना ॥

---

(१) टेक।

रनजीता[1] गुरुचरन तुम्हारे। जीवन प्रान अधार हमारे ॥
गुरु के चरन मुक्ति फल दायक। सहजो गुरु के चरन सहायक ॥१९॥

॥ दोहा ॥

गुरु पग निस्चै परसिये, गुरु पग हिरदे राख।
सहजो गुरु पग ध्यान करि, गुरु बिन और न भाख ॥ २० ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के चरन कँवल चित राखूँ। आठ सिद्धि नौ निधि सब नाखूँ ॥
सकल पदारथ गुरु पग माहीँ। गुरु पग परसे सब दुख जाहीँ ॥
गति मति पलटे गुरु पग हरसो। गुरु पग परसे त्रिभुवन दरसै ॥
गुरु पग परसे ब्रह्म बिचारै। गुरु पग परसे माया छाँड़ै ॥
गुरु पग परसे जोग जुगन्ता। गुरु पग परसे जीवन मुक्ता ॥
गुरु पग परसे बन्धन छूटै। मोह ममत की फाँसी टूटै ॥
गुरु पग परसे हरि पद पावै। रहै अमर है गर्भ न आवै ॥
चरनदास पग महिमा भारी। बार बार सहजो बलिहारी ॥२१॥

गुरु आज्ञा

॥ दोहा ॥

गुरु आज्ञा दृढ़ करि गहै, गुरु मत सहजो चाल।
रोम रोम गुरु को रटै, सो सिष होय निहाल ॥ २२ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की अज्ञा दृढ़ करि गहिये। गुरु की अज्ञा ही में रहिये ॥
गुरु अज्ञा बिन काज न कीजै। हानि होय तो होने दीजै ॥

(१) चरनदास जी का घरऊ नाम।

गुरु की अज्ञा बिघ्न न कोई। गुरु की अज्ञा गुरमुख होई ॥
गुरु की अज्ञा भक्ति बढ़ावै। गुरु की अज्ञा पार लँघावै ॥
गुरु की अज्ञा सकल सिरोमन। गुरु की अज्ञा चलै सो हरिजन ॥
गुरु अज्ञा मानै सोइ साधू। गुरु अज्ञा पद भेद अगाधू ॥
जो कोई गुरु की अज्ञा भूलै। फिर फिर कष्ट गर्भ में झूलै ॥
चरनदास गुरु अज्ञा पूरी। बिन अज्ञा करना सब कूरी ॥
अज्ञाकारी गुरमुख नीके। सहजो लोक भोग सब फीके॥२३॥

गुरु बिमुख

॥ दोहा ॥

गुरु अज्ञा मानै नहीँ, गुरुहिँ लगावै दोष।
गुरु निन्दक जग में दुखी, मुए न पावै मोष ॥ २४ ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसोँ का दरसन नहिँ लीजै। चर्चा बात गोष्टि नहिँ काजै ॥
उनका संग करै जो कोई। बेमुख निगुरा निन्दक होई ॥
गुरु-दोषी की गति मति गाऊँ। अपने मनहीँ कूँ समझाऊँ ॥
उनकी चौरासी नहिँ छूटै। काल जाल जम जोरा लूटै ॥
फिर फिर जूनी संकट आवै। गर्भ बास में बहु दुख पावै ॥
जग में पात बगूला जैसे। जीवत प्रेत निसाचर ऐसे ॥
मन मैला तन सदा उदासी। गल में डिम्भ कपट की फाँसी ॥
सहजो तिन तेँ दूरहि भाजै। नाम लेत मम रसना लाजै॥२५॥

॥ दोहा ॥

जो कुछ करै तो मनमुखी, मेटै गुरमुख रीत।
भेद बचन समझै नहीँ, चलै चाल बिपरीति ॥२६॥

साध कहावै आप कूँ, चलै दुष्ट की चाल।
बाद लिये फूला फिरै, बहुत बजावै गाल ॥२७॥

॥ चौपाई ॥

बेमुख बिषई ज्ञान उचारै। पाँचो जात न मन कूँ मारै ॥
दारा सुत कूँ हरि गुरु जानै। तन मन बिषय बास लिपटानै ॥
पाप पुन्य कूँ झूठ बतावै। परनारी परधन चित लावै ॥
महा अजोगी जोग न ठानै। छल बल झूठ कपट सिध मानै ॥
साध संत कूँ ठगिया जानै। राम भक्ति कूँ तुच्छ बखानै ॥
ऐसे अपराधी मति मारे। तृस्ना काम क्रोध के जारे ॥
डूबे लोभ लहर के माहीँ। सुपने छिमा सील चित नाहीँ ॥
हिंसा अंकुस लिये दुखदाई। मुख देखै नहिं सहजोबाई॥२८॥

गुरु शब्द

॥ दोहा ॥

गुरू बचन हियरे धरै, ज्यौँ किर्पिन के दाम।
भूमि गड़े माथे दिये, सहजो लहै तो राम ॥२९॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के सब्द हिये बिच धारै। गुरमुख गुरु के सब्द सम्हारै ॥
तीन लोक जम जोरा लूटै। गुरु के सब्द बिना नहिँ छूटै ॥
मोह नीँद मेँ सब नर पागे। गुरु के सब्द बिना नहिँ जागे ॥
गुरु के सब्द स्रवन जो पावैँ। छूटै कुबुधि परम गति पावैँ ॥
गुरु के सब्द प्रेम उजलावैँ। गुरु के सब्द हरि आन मिलावैँ ॥
गुरु के सब्द जीय बुधि नासैँ। गुरु के सब्द अभय पद भासैँ ॥
गुरु के सब्द राह सोई चलना। बेद पुरान कहा लै करना ॥

चरनदास गुरु सब्द तुम्हारे। हमरे भर्म फन्द सब जारे।
गुन सब गुरु के बचनै माहीँ। सहजो सिष जो बिसरै नाहीँ॥२०॥

उपदेश गुरुभक्ति का

॥ दोहा ॥

सिष का माना सतगुरु, गुरु झिड़कै लख बार।
सहजो द्वार न छोड़िये, यही धारना धार॥२१॥
गुरु दरसन कर सहजिया, गुरु का कीजै ध्यान।
गुरु की सेवा कीजिये, तजिये कुल अभिमान॥२२॥
सतगुरु दाता सर्ब के, तू किर्पिन कंगाल।
गुरु महिमा जानै नहीँ, फस्यौ मोह के जाल॥२३॥
गुरु सूँ कछु न दुराइये, गुरु सूँ झूठ न बोल।
बुरी भली खोटी खरी, गुरु आगे सब खोल॥२४॥
सहजो गुरु रच्छा करैँ, मेटैँ सब दुख दुन्द।
मन की जानैँ सब गुरू, कहा छिपावै अन्ध॥२५॥

गुरू महिमा

॥ दोहा ॥

सहजो कारज जगत के, गुरु बिन पूरे नाहिँ।
हरि तो गुरु बिन क्योँ मिलैँ, समझ देख मन माहिँ॥२६॥
परमेसर सूँ गुरु बड़े, गावत बेद पुरान।
सहजो हरि के मुक्ति है, गुरु के घर भगवान॥२७॥
अष्टादस और चार षट, पढ़ि पढ़ि अर्थ कराहिँ।
भेद न पावैँ गुरु बिना, सहजो सब भर्माहिँ॥२८॥

सकल बिकल्प सब छोड़कर, गुरु चरनन चित लाव।
सहजो निस्चै हरि जपो, बहुर न ऐसो दाव ॥३९॥
दीपक ले गुरु ज्ञान को, जगत अँधेरे माहिँ।
काम क्रोध मद मोह में, सहजो उरझै नाहिँ ॥४०॥
सहजो गुरु परताप सूँ, होय समुन्दर पार।
बेद अर्थ गूँगा कहै, बानी कितइक बार ॥४१॥
सहजो सतगुरु के मिले, भये और सूँ और।
काग पलट गति हन्स है, पाई भूली ठौर ॥४२॥
सहजो यह मन सिलगता, काम क्रोध की आग।
भली भई गुरु ने दिया, सील छिमा का बाग ॥४३॥
निस्चै यह मन डूबता, मोह लोभ की धार।
चरनदास सतगुरु मिले, सहजो लई उबार ॥४४॥
ज्ञान दीप सतगुरु दियौ, राख्यौ काया कोट।
साजन बसि दुर्जन भजे[1], निकस गई सब खोट ॥४५॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, रोम रोम उजियार।
तीन लोक दृष्टा भये, मिट्यो भरम अँधियार ॥४६॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, नैना भये अनन्त।
आदि अन्त मध एक ही, सूझि पड़ै भगवन्त ॥४७॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, देख्यौ आतम रूप।
तिमिर गयो चाँदन भयो, पायो परघट गूप ॥४८॥
सहजो गुरु परसन्न है, मेट्यौ मन सन्देह।
रोम रोम सूँ प्रेम उठि, भीँज गई सब देह ॥४९॥
सहजो गुरु परसन्न है, एक कह्यो परसंग।
तन मन तेँ पलटी गई, रँगी प्रेम के रंग ॥५०॥

---

(१) भागे।

सहजो गुरु परसन्न है, मूँद लिये दोउ नैन।
फिर मो सूँ ऐसे कही, समझ लेहि यह सैन ॥५१॥
सहजो गुरु किरपा करी, कहा कहूँ मैं खोल।
रोम रोम फुल्लित भई, मुखे न आवै बोल ॥५२॥
चिउटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसों ना ठहराय।
सहजो कूँ वा देस में, सतगुरु दई बसाय ॥५३॥
सिष पौधा नौधा अभी, गुरु किरपा की बाड़।
सहजो तरवर फैल बड़, सुफल फलै वह झाड़ ॥५४॥
सहजो सिष ऐसा भला, जैसे माटी मोय।
आपा सौंपि कुम्हार कूँ, जो कछु होय सो होय ॥५५॥
सहजो सिष ऐसा भला, जैसे चकई डोर।
गुरु फेरैं त्यौं ही फिरै, त्यागै अपना खोर[1] ॥५६॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे धोबी होय।
दै दै साबुन ज्ञान का, मलमल डारै धोय ॥५७॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, मेटै मन सन्देह।
नीच ऊँच देखै नहीं, सब पर बरसै मेह ॥५८॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे सूरज धूप।
सब जीवन कूँ चाँदना, कहा रंक कहा भूप ॥५९॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, समदृष्टी निर्लोभ।
सिष कूँ प्रेम समुद्र में, करदे झोबाझोब ॥६०॥
सहजो गुरु बहुतक फिरैं, ज्ञान ध्यान सुधि नाहिँ।
तार सकैं नहिँ एक कूँ, गहैं बहुत की बाहिँ ॥६१॥
ऐसे गुरु तो बहुत हैं, धूत धूत धन लेहिँ।
सहजो सतगुरु जो मिलैं, मुक्ति धाम फल देहिँ ॥६२॥

(१) रास्ता, आदत।

कुटुँब जाल जित तित रुप्यो, पसु पंछी नर माहिँ।
सहजो गुरुब्रती बचै, निगुरे अरुझत जाहिँ ॥६३॥
बार बार नाते मिलै, लख चौरासी माहिँ।
सहजो सतगुरु न मिलैँ, पकड़ निकासैँ बाहिँ ॥६४॥
जन्म जन्म हरि संग ही, मिलि रह्यौ आठो जाम।
सहजो गुरु के बिन मिले, पायौ ना बिसराम ॥६५॥
सहजो गुरु पूरा मिलै, सिष मैला घट चित्त।
मेह बरसै कालर[1] जिमीँ, खेत न उपजै छित्त[2] ॥६६॥
मलयागिरि के निकट जो, सब द्रुम चंदन होहिँ।
कोकर सीसोँ चीड़ वृछ, हुए न कबहूँ होहिँ ॥६७॥
सिष माटी सिष पाथरा, सिष लकड़ी सम जोय।
सहजो गुरु पारस लगै, कैसे कंचन होय ॥६८॥
सिष्य सराई[3] तेल बिन, बाती भी नहिँ माहिँ।
सहजो गुरु दीपक मिलै, चाँदन होसी नाहिँ ॥६९॥
सहजो गुरु समरथ कला, सर्बदेसी सर्ब अंग।
कोइ कैसा ही सिष्य हो, सब पर गेरै रंग ॥७०॥
सहजो गुरु रँगरेज सा, सब हीँ कूँ रँग देत।
जैसा तैसा बसन है, जो कोई आवै सेत ॥७१॥
सहजो गुरु दरसन दियो, पूर रहे सब ठौर।
जहाँ तहाँ गुरु ही लखै, दृष्टि न आवै और ॥७२॥
देखत ही आनंद भये, सतगुरु पहुँचे आय।
भवसागर दुख रूप सूँ, सहजो लई बचाय ॥७३॥
चरनदास के चरन पर, सहजो वारै प्रान।
जगत ब्याध सूँ काढ़ि कर, राख्यो पद निरबान ॥७४॥

(१) कल्लर—ऊसर। (२) पृथ्वी। (३) दिया या दीवा।

सहजो गुरु महिमा कही, पढ़ सुनि हिया सिराय[1]।
उपजै गुरु की भक्ति दृढ़, दुबिधा दुर्मति जाय ॥ ७५ ॥

साध महिमा

॥ दोहा ॥

साध मिले गुरु पाइया, मिटि गये सब सन्देह।
सहजो कूँ सम ही भयो, कहा गिरिवर कहा गेह ॥ १ ॥
साध मिले पूरी भई, जनम जनम की आस।
सहजो पायो भाग तें, सतसंगत में बास ॥ २ ॥
सहजो साधन के मिले, मन भयो हरि के रूप।
चाह गई थिरता भई, रंक लख्यौ सोइ भूप ॥ ३ ॥
साध मिले हरि हो मिले, मेरे मन परतीत।
सहजो सूरज धूप ज्यौं, जल पाले की रीति ॥ ४ ॥
साध मिले दुख सब गये, मंगल भये सरीर।
बचन सुनत ही मिटि गई, जनम मरन की पीर ॥ ५ ॥
साध संग में चाँदना, सकल अँधेरा और।
सहजो दुर्लभ पाइये, सतसंगत में ठौर ॥ ६ ॥
सतसंगत की नाव में, मन दीजे नर नार।
टेक बल्ली दृढ़ भक्ति की, सहजो उतरै पार ॥ ७ ॥
साध संग तीरथ बड़ो, ता में नीर बिचार।
सहजो न्हाये पाइये, मुक्ति पदारथ चार ॥ ८ ॥
जो आवै सतसंग में, जाति बरन कुल खोय।
सहजो मैल कुचैल जल, मिलै सु गंगा होय ॥ ९ ॥
सहजो संगत साध की, काग हन्स ह्वै जाय।
तजि के भच्छ अभच्छ कूँ, मोती चुगि चुगि खाय ॥ १० ॥
जब चेतै जबही भला, मोह नींद सूँ जाग।
साधू की संगत मिलै, सहजो ऊँचे भाग ॥ ११ ॥

---

(१) ठंडा होय।

जो जन आवै टूट करि, साधू ह्वै दरसाय।
सहजो साँभर खेत में, गिरि साँभर ह्वै जाय ॥१२॥

सहजो संगत साध की, भली भई कुसलात।
नातर आवा गवन में, जम की करते घात ॥१३॥

सहजो संगत साध की, छूटै सकल बियाध।
दुर्मति पाप रहै नहीँ, लागै रंग अगाध ॥१४॥

साध बृच्छ बानी कली, चर्चा फूले फूल।
सहजो संगत बाग में, नाना फल रहे भूल ॥१५॥

सहजो दरसन साध का, दो नैनौं भरि लेहि।
तिहूँ ताप नसि जायँगे, सीतल होगी देहि ॥१६॥

सहजो दरसन साध का, देखूँ वारूँ प्रान।
जिन की किरपा पाइये, निर्भय पद निर्बान ॥१७॥

दुष्ट लक्षण

॥ दोहा ॥

दुष्टन की महिमा कहूँ, सुनियो संत सुजान।
ताना दै दै दृढ़ करैं, भक्ती जोग अरु ज्ञान ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

घन दुष्टी जो दृढ़ता देई। निन्दा कर पातक हरि लेई ॥
दुष्टी त्यागी दीखै भारी। समझ सोच सहजो बलिहारी ॥
तज दइ साध संग गुरु चरना। त्यागी भक्ति ध्यान का धरना ॥
त्यागी उत्तम रहनी गहनी। त्यागी हरि की लीला कहनी ॥
त्यागे बचन बिमल सुखदाई। तजि दियो साँच झूठ लौ लाई ॥
जतसतसील छिमातजि दीन्हा। सो साधू माथे धरि लीन्हा ॥
तजी दीनता सुबुधि चिताई[1]। सो गरीब साधौं ने पाई ॥
तजि बैराग परम संतोषा। सब बिधि तज्यो राम गति मोषा ॥१९॥

॥ दोहा ॥

भली चाल दुष्टी तजै, ऐसा त्यागी होय ।
बुरी चाल साधू तजै, तजन कहै सब कोय ॥२०॥

साध लक्षण

॥ चौपाई ॥

साध सोई जो काया साधै । तजि आलस और बाद बिबादै ॥
गहै धारना सब गति भारी । तजै बिकलता अस्तुति गारी ॥
छिमावन्त धीरज कूँ धारै । पाँचो बस करि मन कूँ मारै ॥
त्यागै झूँठ साँच मुख बोलै । चित इस्थिर इत उत ना डोलै ॥
तन जग में मन हरि के पासा । लोक भोग सूँ सदा उदासा ॥
जत सत नख सिख सीतलताई । तनमन बचन सकल सुखदाई ॥
निर्गुन ध्यानी ब्रह्म गियानी । मुख सूँ बोलै अमृत बानी ॥
समझ एकता भाव न दूजे । जिनके चरन सहजया पूजे ॥२१

॥ दोहा ॥

निर्द्वन्दी निर्बैरता, सहजो अरु निर्वास ।
संतोषी निर्मल दसा, तकै न पर की आस ॥२२॥
ज्ञान मध्य इस्थिर दसा, ध्यान मध्य गलतान ।
सहजो साधू राम के, तजैं बड़ाई मान ॥२३॥
जो सोवैं तौ सुन्न में, जो जागैं हरि नाम ।
जो बोलैं तौ हरि कथा, भक्ति करैं निःकाम ॥२४॥
तन मन मेटैं खेद सब, तज उपाधि की चाल ।
सहजो साधू राम के, तजैं कनक और बाल[1] ॥२५॥
दीर्घ बुद्धि जिन की महा, सील सदा ही नैन ।
चेतनता हिरदै बसै, सहजो सीतल बैन ॥२६॥
तन कूँ साधे ही रहैं, चित कूँ राखैं हाथ ।
सहजो मन कूँ यौं गहैं, चलै न इन्द्रिन साथ ॥२७॥

---

(१) स्त्री ।

रंक दुखी राजा दुखी, दुखी सकल संसार।
साध सुखी सहजो कहै, पाया भेद अपार ॥४०॥
ना सुख दारा सुत महल, ना सुख भूप भये।
साध सुखी सहजो कहै, तृस्ना रोग गये ॥४१॥

द्वादस प्रकार के वचन साध के

१ मीठी बोली।
२ चरपरी बोली।
३ अमृत-बचन बोली।
४ सीतल सुगन्ध बोली।
५ महा फूल बोली।
६ सलिल बोली।
७ बिघ्न-बिदार बोली।
८ शुद्ध सुख सज्जन बोली।
९ भर्म-निवारन बोली।
१० भक्ति-दृढ़ावन बोली।
११ स्थिर बोली।
१२ साँची बोली।

द्वादस प्रकार के वचन दुष्ट के

१ पाहन बोली।
२ काँटेदार बोली।
३ बिष भुवँग बोली।
४ अग्नि सरूप बोली।
५ अकड़े खटक बोल।
६ हिया-बेध बोली।
७ खट्टी बोली।
८ कड़ुई दुर्गंध बोली।
९ झूठी बोली।
१० भरमिक बोली।
११ निगुरी बोली।
१२ डिगमिगाट बोली।

वैराग उपजावन का अंग

॥ दोहा ॥

सहजो भज हरि नाम कूँ, तजो जगत सूँ नेह।
अपनो तो कोइ है नहीं, अपनी सगी न देह ॥ १ ॥
यही कही गुरुदेव जू, यही पुकारैं सन्त।
सहजो तज या जगत कूँ, तोहि तजैगो अन्त ॥ २ ॥
कलह कल्पना दुख घना, सदा रहै मन भंग।
अकस[1] भरे कूँ छोड़िये, सहजो जग बेढंग ॥ ३ ॥

नित ही प्रेम पगे रहैँ, छके रहैँ निज रूप।
समदृष्टी सहजो कहै, समझैँ रंक न भूप ॥२८॥

सुरत नहीँ ब्योहार मेँ, जगत रीत सूँ पीठ।
सनमुख हैँ गुरु भक्ति मेँ, सहजो हरि के ईठ[1] ॥२६॥

साध असंगी सँग तज, आतम ही को संग।
बोध रूप आनन्द मेँ, पियैँ सहज को रंग ॥३०॥

दुर्जन ना साजन नहीँ, नहीँ बैर नहिँ प्रीति।
सकल बिकल उनके नहीँ, सहजो हरि जन रीति ॥३१॥

सहजो हरि जन मुक्त हैँ, डार दुई की पोट।
चाह गई संसा मिटा, बंधन छूटे कोट ॥३२॥

राग द्वेष सूँ रहित हैँ, बैरागी निरबन्ध।
सहजो इच्छा ना रही, माया ब्रह्म की संध ॥३३॥

आसन संजम साध करि, साधै प्रान अपान[2]।
सहजो मुद्रा जो सधै, तौ जोगी परवान ॥३४॥

तीनोँ बंध लगाय के, अनहद सुनै टकोर।
सहजो सुन्न समाधि मेँ, नहीँ साँझ नहिँ भोर ॥३५॥

ना सुख बिद्या के पढ़े, ना सुख बाद बिबाद।
साध सुखी सहजो कहै, लागै सुन्न समाध ॥३६॥

मुए दुखी जीवत दुखी, दुखी भूख आहार।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ नित्त बिहार ॥३७॥

चाह दुखी आसा दुखी, महा दुखी अज्ञान।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ केवल ज्ञान ॥३८॥

धनवन्ते सब ही दुखी, निर्धन हैँ दुख रूप।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ भेद अनूप ॥३६॥

---

(१) इष्ट, प्यार। (२) प्राण और अपान वायुओं के नाम हैं—प्राण अंतर खिचने वाली स्वासा को और अपान बाहर चलने वाली स्वासा को कहते हैं, जिनको प्राणायाम के अभ्यास मेँ साधना पड़ता है।

रंक दुखी राजा दुखी, दुखी सकल संसार।
साध सुखी सहजो कहै, पाया भेद अपार ॥४०॥
ना सुख दारा सुत महल, ना सुख भूप भये।
साध सुखी सहजो कहै, तृस्ना रोग गये ॥४१॥

द्वादस प्रकार के वचन साध के

१ मीठी बोली।
२ चरपरी बोली।
३ अमृत-बचन बोली।
४ सीतल सुगन्ध बोली।
५ महा फूल बोली।
६ ललित बोली।
७ बिघ्न-बिदार बोली।
८ शुद्ध सुख सज्जन बोली।
९ भर्म-निवारन बोली।
१० भक्ति-दृढ़ावन बोली।
११ स्थिर बोली।
१२ साँची बोली।

द्वादस प्रकार के वचन दुष्ट के

१ पाहन बोली।
२ काँटेदार बोली।
३ बिष भुवँग बोली।
४ अग्नि सरूप बोली।
५ अकड़े खटक बोल।
६ हिया-बेध बोली।
७ खट्टी बोली।
८ कड़ुई दुर्गंध बोली।
९ झूठी बोली।
१० भरमिक बोली।
११ निगुरी बोली।
१२ डिगमिगाट बोली।

वैराग उपजावन का अंग

॥ दोहा ॥

सहजो भज हरि नाम कूँ, तजो जगत सूँ नेह।
अपनो तो कोइ है नहीं, अपनी सगी न देह ॥ १ ॥
यही कही गुरुदेव जू, यही पुकारैं सन्त।
सहजो तज या जगत कूँ, तोहि तजैगो अन्त ॥ २ ॥
कलह कलपना दुख घना, सदा रहै मन भंग।
अकस[1] भरे कूँ छोड़िये, सहजो जग बेढंग ॥ ३ ॥

जैसे सँड़सी लोह की, छिन पानी छिन आग।
ऐसे दुख सुख जगत के, सहजो तू मत पाग ॥ ४ ॥
अचरज जीवन जगत में, मरिबो साँचो जान।
सहजो अवसर जात है, हरि सूँ ना पहिचान ॥ ५ ॥
जग से या जग में पगा, जग सँग दीन्हे प्रान।
राम तजै जग सूँ रचै, सहजो निस्चय हान ॥ ६ ॥
झूठा नाता जगत का, झूठा है घर बास।
यह तन झूठा देख कर, सहजो भई उदास ॥ ७ ॥
जब लग चावल धान में, तब लग उपजै आय।
जग छिलके कूँ तजि निकस, मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥ ८ ॥
कुटँब सँगाती बीच में, आदि अन्त नहिँ होय।
बीच मिले बिच ही गये, सहजो सँग न कोय ॥ ९ ॥
सहजो स्वारथ सब लगे, दारा सुत औ बोर।
जीवत जोतैँ बैल ज्यों, मुए चढ़ावैँ सीर[2] ॥१०॥
कोई किसी के संग ना, रोग मरन दुख बन्ध।
इतने पर अपनो कहैँ, सहजो ये नर अन्ध ॥११॥
दरद बटाय सकैँ नहीँ, मुए न चालैँ साथ।
सहजो क्योँकर आपने, सब नाते बरबाद ॥१२॥
मर बिछुड़े जो कुटँब सूँ, बहुर न देखै आय।
महल द्रव्य सन्तान कूँ, सहजो पचै बलाय ॥१३॥
मरि बिछुड़न ... सूँ पात।
सहजो काया ... बात ॥१४॥
सहजो जीवत ... ।
रोवैँ स्वारथ

(१) वैर। (२) ज...
... लिए मन्नत चढाते हैं।

सहजो धन माँगे कुटँब, गाड़ा धरा बताय।
जो कुछ है सो दे हमैं, फिर पाछे मरि जाय ॥१६॥
मुख देखै ढाँपै भजै, तड़ दे तोड़ै नेह।
सहजो पति सुत निज हितू, जारि करैंगे खेह ॥१७॥
काढ़ काढ़ बेगी कहै, भीतर बाहर लोय।
जीव छुटे सहजो कहै, तन का सगा न कोय ॥१८॥
यह मन्दिर यह नारि है, यह धन यह सन्तान।
तेरी ना सहजो कहै, काहे करत गुमान ॥१९॥
जन्म जुवा सों हारिहो, कियो न लाहा मूल।
डार पात फल सींच कर, सहजो काटत मूल ॥२०॥
सहजो गुरु परताप सूँ, ऐसी जान पड़ी।
नहीं भरोसा स्वास का, आगे मौत खड़ी ॥२१॥
भीतर का भीतर खुलै, कै बाहर खुलि जाय।
देह खेह ह्वै जायगी, जैहौ जन्म गँवाय ॥२२॥
स्वासा दीपक के बुझे, होत अँधेरी देह।
सहजो सूनी प्रान बिनु, जब कैसो हरि नेह ॥२३॥
सहजो फिर पछितायगी, स्वांस निकसि जब जाय।
जब लग रहै सरीर में, राम सुमिर गुन गाय ॥२४॥
स्वास खजानो जातु है, ता की सोधी नाहिं।
सहजो खर्चो का रह्यो, कर हिसाब घर माहिं ॥२५॥
सहजो नौबत स्वास की, बाजत है दिन रैन।
मूरख सोवत है महा, चेतन कूँ नहिं चैन ॥२६॥
हिरनाकुस से ह्वै मिटे, दुर्जोधन सिसुपाल।
कुंभकरन रावन गये, सहजो खाया काल ॥२७॥
निस्चै मरना सहजिया, जीवन की नहिं आस।
कै टूटी सी झोपड़ी, कै मन्दिर में बास ॥२८॥

कै गरीब सिर टोकरी, कै सिर छत्तर होय।
जन्म मरन में एक से, सहजो भाँति न दोय ॥२९॥
मरना है रहना नहीं, जाना वाही ठौर।
सहजो कै कंगाल हो, कै हो द्रव्य कड़ोर ॥३०॥
आपन हूँ थिर होहिं जो, करैं और को सोग।
सहजो साथी नाव के, सभी बटाऊ लोग ॥३१॥
बैठि बैठि बहुतक गये, जग तरवर की छाँहिं।
सहजो बटाऊ बाट के, मिलि मिलि बिछुड़त जाहिं ॥३२॥
यह रस्ता बहता रहै, थमै नहीं छिन एक।
बहु, आवैं बहु जातु हैं, सहजो आँखन देख ॥३३॥
जग देखत तुम जावगे, तुम देखत जग जाय।
सहजो योंही रीति है, मत कर सोच उपाय ॥३४॥
मुए सो काया जारई, बहुरि न मिलिहै आय।
रोये तें कहा होत है, सहजो झुरै बलाय ॥३५॥
झुरि झुरि के पिंजर भये, रोय गँवाये नैन।
मरे गये सो ना मिले, सहजो सुने न बैन ॥३६॥
जो रोये सूँ बाहुरै, तौ रोवौ दिन रात।
तन छीजै वह न मिलै, सहजो कूड़ी बात ॥३७॥
काहे कूँ रोवत रहौ, कल्प न होवै काज।
सहजो मुए सो मरि गये, आवैं काल्ह न आज ॥३८॥
देह निकट तेरे पड़ी, जीव अमर है नित्त।
दुइ में मूवा कौन सा, का सूँ तेरा हित्त ॥३९॥
जो तेरा हित देह सूँ, नख सिख ताही[1] खंड।
जीव अमर सहजो कहै, व्यापक और अखंड ॥४०॥

(१) नाहीं।

तेरा थानी क्यौं मुवा, क्यों न रखा गहि बाहिँ ।
सहजो बहुतक मिलि छुटे, चौरासी के माहिँ ॥४१॥
कभुवक तेरा बाप है, कभुवक तेरा पूत ।
कभुवक तेरा मित्र है, कभुवक तेरा सूत[1] ॥४२॥
जो तेरे सँग प्यार था, जाता वाके साथ ।
कै वाही कूँ राखता, सहजो गहि कर हाथ ॥४३॥
कलप रोय पछिताय थक, नेह तजौगे कूर ।
पहिले ही सूँ जो तजै, सहजो जो जन[2] सूर ॥४४॥
यौं खाता यौं सोवता, मीठे कहता बोल ।
यह बिचार तू मत करै, चित रहै डाँवाडोल ॥४५॥
बैठि पहिरि यौं चालता, बस्तर भूषन लाल ।
यह बिचार तू मत करै, छल रूपी जग जाल ॥४६॥
आगे रो रो क्या किया, अब क्यौं रोवै भाँड ।
संग न आया ना चलै, यह जग झूठी माँड ॥४७॥
आगे मुए सो जा चुके, तू भी रहै न कोय ।
सहजो पर कूँ क्या झुरै, अपना ही कूँ रोय ॥४८॥
बहुत गई थोड़ी रही, यह भी रहसी नाहिँ ।
जन्म जाय हरि भक्ति बिनु, सहजो झुर मन माहिँ ॥४९॥

कर्म अनुसार योनि

॥ दोहा ॥

उपजि उपजि फिर फिर मरौ, जम दे दारुन दुक्ख ।
लाज नहीँ सहजो कहै, धिग तुम्हारो मुक्ख ॥५०॥
पसु पंछी नर सुर असुर, जलचर[3] कीट पतंग ।
सबही उतपति कर्म की, सहजो नाना अंग ॥५१॥

---

(१) शत्रु दूत । (२) सावत । (३) थिरच्चर ।

कर्मन के प्रेरे फिरौ, जन्म जन्म दुख होय।
मुक्ति बिचारो सहजिया, आवागवन जु खोय॥५२॥
जन्म चलो ही जातु है, ये दिन आछे जाहिँ।
जीवत जागह ना करी, बैठोगे केहि ठाहिँ॥५३॥
सहजो रहै मन बासना, तैसी पावै ठौर।
जहाँ आस तहँ बास है, निस्चै करी कठोर॥५४॥
देह छुटै मन में रहै, सहजो जैसी आस।
देह जन्म जैसो मिलै, जैसे ही घर बास॥५५॥

॥ चौपाई ॥

जाकी आस रहै मन्दिर में। होकर घूँस बसै सो घर में॥
रहै बासना द्रब्य मँझारा। जनमै नाग होय पुनि कारा॥
रहै बासना तिरिया माहीँ। कोटी[1] स्वान धरै तन आई॥
रहै बासना पुर्षा बर की। कुतिया होय चूहड़े[2] घर की॥
जा की रहै पुत्र में आसा। सूवर जन्म नीच घर बासा॥
जा का मन रहै राज दुवारे। हस्ती हो सिर मेलै छारे॥
रहै बासना नीर पियासी। मीन देह धरि जल की बासी॥
रहै बासना बाहन संगा। होय जन्म ले बाहन[3] अंगा॥
जहाँ बासना जित ही जाई। यह मत बेद पुरानन गाई॥
चरनदास गुरु मोहिँ बताई। तजो बासना सहजोबाई॥५६॥

॥ दोहा ॥

सहजो लोक प्रलोक की, नहीँ बासना ताहि।
सो वह ब्रह्म सरूप है, सागर लहर समाय॥५७॥
जा की गुरु में बासना, सो पावै भगवान।
सहजो चौथे पद बसै, गावत बेद पुरान॥५८॥
परमेसुर की बासना, अन्त समय मन माहिँ।
तन छूटे हरि कूँ मिलै, उपजै बिनसै नाहिँ॥५९॥

साध संग की बासना, जेहि घट पूरी सोय ।
मनुष जन्म सतसँग मिलै, भक्ति परापत होय ॥६०॥
सहजो हरि के नाम की, रहै बासना बीर ।
चौरासी संकट कटै, जम्म की छूटै पीर ॥६१॥
चौरासी काया पहिर, दुख सहे नाना त्रास ।
भली भई अब के कुसल, चरनदास को आस ॥६२॥
चौरासी के त्रास सुनि, जम्म किंकर की मार ।
सहजो आई गुरु सरन, सुमिर्यो सिरजन हार ॥६३॥
धन जोबन सुख सम्पदा, बादर की सी छाहँ ।
सहजो आखिर धूप है, चौरासी के माहँ ॥६४॥
चौरासी जोनी भुगत, पायौ मनुष सरीर ।
सहजो चूके भक्ति बिनु, फिर चौरासी पीर ॥६५॥

जन्म दशा

॥ दोहा ॥

जन्म मरन अब कहत हूँ, कहूँ अवस्था चार ।
चौरासी जमदंड कूँ, भिन्न भिन्न विस्तार ॥६६॥
चरनदास अज्ञा दई, सहजो परगट गाय ।
तासूँ पढ़ि सुनि जीव की, सकल बन्ध कटि जाय ॥६७॥

॥ चौपाई ॥

पापी जीव गर्भ जब आवै । भवन अँधेरे बहु दुख पावै ॥
तल मूड़ी ऊपर को पाऊँ । मुख लिंगी[1] और बिष्टा ठाऊँ ॥
जठर अगिन इक रस जहँ लागी । अधिक तपै जहँ पतित अभागी ॥
खट्टा मीठा माता खावै । लागि छुरी सी बहु दुख पावै ॥
आप दुखी मात दुख पाया । दसैं महीने जग मैं आया ॥
जग जंजाल देखकर रोया । नर नारी मिलि सभी बिगोया ॥

---

(१) मूत्र या पेशाब ।

माया मोह पवन लगि भूला। सहजो गोद पालने भूला॥
नाते सभी लगे उठि झूठे। पड़ा बन्ध में कैसे छूटे॥६८॥

॥ दोहा ॥

सब नाते उठि उठि लगे, रोम रोम लिया बन्ध।
सहजो यह भी रलि मिला, फिर फिर भूला अन्ध॥६९॥

॥ चौपाई ॥

कोई कहै मैं इसकी माई। कोई कहै लाला की दाई॥
कोई कहै यह सुन्दर हीरा। गोद खेलाऊँ अपना बीरा॥
कोई कहै मैं या का बापू। बालक पाया पुत्र प्रतापू॥
कोई कहै मैं या की बूवा। चाचा कहै भतीजा हूवा॥
कोई कहै यह मेरा भाई। कोई कहै मैं दादी आई॥
कोई कहै मैं मा की बहिनी। कोई कहै मैं या की नानी॥
कोई कहै मैं इसका मामा। लाया खाँड़ खड़ूले जामा॥
कोई कहै मैं या का नाना। मामी ने भाँजा कर जाना॥
कोई कहै यह पोता बाल[1]। कोई कहै यह मेरा लाल[2]॥७०॥

॥ दोहा ॥

सब नाते लिये मान कर, घेरा घेरी घेर।
झूठे साँचे से लगैं, सुपने कंचन मेर[3]॥७१॥
पित्र देवता गोतिया, गरह नछत्तर सौन[4]।
सहसो बन्धन बँधि गये, ताहि छुड़ावै कौन॥७२॥

॥ चौपाई ॥

गूँगा घी कहना जब सीखा। सेढू नाम मदारी भीखा॥
माय बाप ले नाम पुकारैं। जब किलकैत बतन मन वारैं॥
मुख चूमैं और कंठ लगावैं। देवी देवा बहुत मनावैं॥
रोग होय तो बहु दुख पावैं। ले ले जहाँ तहाँ पग धावैं॥

---

(१) वाला। (२) साला। (३) पहाड। (४) शायद "सरवन" से मतलब है जो बडे भारी भक्त माँ बाप के थे और उनको बहँगी पर लिये फिरते थे। इनका चित्र सावन मे लोग दीवार पर लिख कर पूजते हैं।

कबहूँ झरि पिंजर ह्वै जावै । कबहूँ खाँसी बहुत सतावै ॥
चलै पेट कबहूँ बहु रोवै । खीजै बहुत नेक नहिँ सोवै ॥
ज्वर कबहूँ दूखैं दोउ नैना । पुनः पुनः[1] दुख लहै न चैना ॥
निकसै दाँत दाढ़ दुख भैया । जब सूँ जन्म दसा दुख पैया ॥७३॥

॥ दोहा ॥

दुक्ख सुक्ख बढ़ने लगा, पाँच बरस भइ देह ।
जब पढ़ने बैठाइया, अपनी बिद्या लेह ॥७४॥

॥ चौपाई ॥

बालक का चित खेल मँझारै । ज्यौं ज्यौं पाधा छड़ियन मारै ॥
बैठि रहै तौ पकड़ बुलावै । बाँधि बाँधि दुख देत पढ़ावै ॥
मन ही मन सोचै दुख भारी । दुर्जन भये बाप महतारी ॥
दुख दे दे कर बहुत पढ़ाया । खोट कपट में घना सँधाया ॥
ऐसे भया बरस द्वादस का । रहा नहीं उनहूँ के बस का ॥
मन में आवै सो पुनि करई । मात पिता सूँ नेक न डरई ॥
खेलै खेल बहुत परकारा । सबही बिधि लड़कापन हारा ॥
बालपना हँस खेल गँवाया । गुरु की टहल सरन नहिँ आया ॥
पाप पुन्न कूँ ना पहिचाना । सहजो कर्ता राम न जाना ॥७५॥

॥ दोहा ॥

तरुनापा फिर आइया, पाँच भूत लै संग ।
जोबन मद मातो रहै, पियै विषय को रंग ॥७६॥

॥ चौपाई ॥

तरुनापा भया सकल सरीरा । अंधा भया बिसरि हरि हीरा ॥
विषय बासना के मद मातो । अहं आपदा के रंग रातो ॥
मूँछ मरोड़ अकड़ता डोलै । काहू तें मुख मीठ न बोलै ॥
कहै बराबर मेरे नाहीँ । बुद्धिमान कोइ याजग माहीँ ॥
मैं बलवन्त सबन पर भारी । द्रब्य कमाऊँ नरन अगारी ॥
महा दुखी सुख मान लियो है । मोह अमल अज्ञान पियो है ॥

---

(१) बार बार ।

भया कुटुम्बी जब सुख कैसा । सहजो बन्ध[१] पड़ै कोइ जैसा ॥
सुत पुत्री उपजै मरि जावै । सोच सोच तन मन दुख पावै ॥७७॥

॥ दोहा ॥

द्रव्यहीन भटकत फिरै, ज्यों सराय को स्वान ।
झिड़कि दियो जेहि घर गया, सहजो रह्यो न मान ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

द्रव्यहीन सब को मुख जोहै । जाति बरन देखै नहिं को है ॥
निहुरि निहुरि ज्यों बन्दर नाचै । राम तजो इन बातन राचै ॥
बेटी ब्याह जोग घर माहीँ । और भूखे सब कित सूँखाहीँ ॥
कहै हवेली एक बनाऊँ । अपने कुल में इज्जत पाऊँ ॥
कलपै बहुत सीस धुनि माथा । सहजो दुखी कुटँब के साथा ॥
आवै ना सतसंगति माहीँ । कुटँब जाल छुटकारा नाहीँ ॥
हरि की भक्ति नहीँ लौ लाई । दारा सुत धन की गुमराई[२] ॥
धन्धा करि जन्म गँवाया । सहज सहज बूढ़ापन आया ॥७९॥

बृद्ध अवस्था

॥ दोहा ॥

सहजो धौले[३] आइया, झड़ने लागे दाँत ।
तन गुंझल[४] पड़ने लगी, सूखन लागी आँत ॥८०॥

॥ चौपाई ॥

डबडबाय आँखन में पानी । बूढ़े तन की यही निसानी ॥
नैनन में जल भरि भरि आवै । दाँत हिलैं दारुन दुख पावै ॥
गोड़े थके दरद बाई का । कफ खाँसी हिये दुख वाही का ॥
खौं खौं करै नीँद नहिं आवै । आप जगै और लोग जगावै ॥
बेबस इन्द्री सिथल भई हैं । अब क्या जीतै सहज गई हैं ॥

(१) कैदखाना । (२) गुमराही, अभिमान । (३) सफेद बाल । (४) झुर्री ।

पूत बहू लख नाक चढ़ावैं । बहुत पुकारै निकट न आवैं ॥
निहुरि चलै लकड़ी लै हाथा । स्वजन कुटँब नहिं दुख के साथा ॥
असी बरस लग बीते साठी[1] । सहजो कहै बहक बुधि नाठी[2] ॥८१॥

॥ दोहा ॥

असी बरस ऊपर लगी, बिरध अवस्था होय ।
आगे की थिरता नहीं, पिछल गई सब खोय ॥८२॥
तीन अवस्था बीत कर, चौथी आई मन्द ।
बृद्ध अवस्था सिर चढ़ी, तहू न चेता अन्ध ॥८३॥

॥ चौपाई ॥

लागी बिरध अवस्था चौथी । सहजो आगे मौत हि मौती ॥
हाथ पैर सिर काँपन लागे । नैन भये बिनु जोति अभागे ॥
सर्वन तें कछु सुनियत नाहीं । दाँत डाढ़ नहिं मुख के माहीं ॥
कंठ रुके कफ बाई घेरे । हाड़ हाड़ सब दुख नें पेरे ॥
बात कहै घर बाहर हाँसा । कुटँब दियो मिलि पौरी[3] बासा ॥
मन चालै सब रस कूँ तरसै । नर नारी कोइ हितू न दरसै ॥
आप आपकूँ इत उत डोलै । बिन पौरुष कोइ मुखहुँ न बोलै ॥
जिन कारन पचिया दिन राती । बात करैं नहिं कुटँब सँगाती ॥
सुत पोते दुर्गंध घिनावैं । टहल करैं तब नाक चढ़ावैं ॥
तिन के मोह तजे जगदीसा । अब मन में कलपै धुनि सीसा ॥
चरनदास गुरु कही बिसेषी । हरि बिन योँ जग जाता देखी ॥८४॥

॥ दोहा ॥

सेत रोम सब हो गये, सूख गई सब देह ।
सहजो वह सुख ना रहा, उड़ने लागी खेह ॥ ८५ ॥
सहजो इन्द्री सब थकी, तन पौरुष भये छीन ।
आसा तृस्ना ना घटी, सहज बचन भये दीन ॥ ८६ ॥

(१) गठिया गया । (२) जाती रही । (३) द्वारे ।

चार अवस्था खो दई, लियो न हरि को नाम ।
तन छूटे जम कूटि है, पापी जम के ग्राम ॥ ८७ ॥
आय जगत में क्या किया, तन पाला कै पेट ।
सहजो दिन धंधे गया, रैन गई सुख लेट ॥ ८८ ॥

मृत्यु दशा

॥ दोहा ॥

सहजो मृत्यू आइया, लेटा पाँव पसार ।
नैन फटे नाड़ी छुटी, सोँही[1] रहा निहार ॥ ८९॥

॥ चौपाई ॥

पित सर का बाई घिर आया । बाय सरक कफ ठौर बसाया ॥
कफ सरका गल रोक लिया है । कंठ रुके कोइ नाहिँ जिया है ॥
घुटर घुटर जब करने लागा । चेतनता सब तन का भागा ॥
नाते घिर घिर सब ही आये । थोथे अपने नेह जनाये ॥
आँखन सूँ जल भरि भरि लावैँ । आपस में सब मोह दिखावैँ ॥
हाय हाय कर कोई बोलै । कोई ढूँढ़त औषध डोलै ॥
कोई कहै कछु द्रब्य बतावो । धरा ढका कछु करज दिखावो ॥
वाकूँ सुधि नहिँ अपने तन की । जम किंकर मारत हैँ घन की ॥९०

॥ दोहा ॥

जम की सूरत देख करि, सुधि बुधि गई नसाय ।
सहजो जो संकट बन्यो, मुख सूँ कह्यो न जाय ॥९१॥
सहजो मिरतू के समय, पीड़ा होय अपार ।
बीछू एक हजार ज्यों, डंक लगै इकसार ॥९२॥

॥ चौपाई ॥

कोई कहै भज रामहि रामा । सहजो कहै कौन अब कामा ॥
आगू सूँ हरि सुमरे नाहीँ । पचि पचि मुआ कुटुँब के माहीँ ॥
हिरदे रखता राम सँगाती । तौ रच्छा अब सब बनि आती ॥

---

(१) सन्मुख, सामने ।

आगू सूँ अभ्यास जो रहता । तो अब मुख सूँ हरि हरि कहता ॥
तन की पीड़ा सब मिटि जाती । जम की तो पै कहा बसाती ॥
राम राम मरते तू कहता । जो आगे सूँ कहता रहता ॥
तैं मन दिया कुटुँब के साथा । हो बैठा घर बाहर नाथा ॥
अपना किया भुगत रे जीया । जो गुरू पूरा ढूँढ़न कीया ॥९३॥

॥ दोहा ॥

पकरि बाँधि जम लै चले, धर्मराय के पास ।
कई बार आगे गये, छप्पन जहाँ तिरास ॥ ९४ ॥
कई भाँति के दंड हैं, सहजो नाना त्रास ।
नरक कुंड दुख भुगत करि, फिर चौरासी बास ॥ ९५ ॥

काल मृत्यु

॥ दोहा ॥

काल मत्यु अब कहत हूँ, चौंक उठे अज्ञान ।
समझैगा कोइ साध जन, कै कोइ बिद्यावान ॥ ९६ ॥
जगत बिषय की बासना, हरि सूँ नाहीं हेत ।
काल मृत्यु कोई मरै, निस्चै होय परेत ॥९७॥
चार पहर का तेल भर, राखै दीवा बाल ।
तेल निबड़ बाती बुझै, सहजो पूरा काल ॥९८॥
कै मानुष कै बायु सूँ, कै पतंग करि देय ।
तेल रहै लोई बुझै, अकाल मृत्यु यौं होय[1] ॥९९॥

॥ चौपाई ॥

बूढ़ा बाला कै है तरुना । काल मृत्यु इक कालहि मरना ॥१००॥

अकाल मृत्यु

॥ दोहा ॥

काल मौत जो आगे गाई । अकाल मृत्यु कहै सहजो बाई ॥
सस्तर मौत मरै जो कोई । यह भी मौत अकालहि होई ॥
बिगड़े रोग पत्थ नहिँ कीन्हो । यह भी मौत अकालहि चीन्हो ॥

---

(१) कहि देय ।

कोई भाँति जो बिष खा मरै । और जीवत पावक में जरै ॥
जल में डूबि जाय कोइ कैसे । लागै प्रेत मरै कोइ ऐसे ॥
साँप डसे छूटै जो काया । महला पतनी[1] तें दबि जाया ॥
कोऊ ठग फाँसी दे मारै । जंगल पसू तोड़ जो डारै ॥
ये सब मृत्यु अकाल दिखाई । मुए सुँ योनि पिसाचर पाई ॥१०१॥

॥ दोहा ॥

प्रेत योनि कूँ पाय कै, दुखी भये अज्ञान ।
आप दुखी दुख देत हैं, उठ गइ सब पहिचान ॥१०२॥

॥ चौपाई ॥

पेट बड़ा मुख सुई समाना । भूख प्यास में फिरै दिवाना ॥
भटकत फिरै ठौर नहिँ पावै । लागत फिरै जूतियाँ खावै ॥
बासा लहै कुचील ठिकाना । आप कुचील कुचीलहि बाना ॥
पाप करै हरि कूँ बिसरावै । सहजो कहै सो यह गति पावै ॥१०३॥

॥ दोहा ॥

रही सो आयुर्दा कटै, मृत्यु लोक के माहिँ ।
जब ही पूरी हो चुकै, बाँधे नर्कहि जाहिँ ॥१०४॥
अति कुचील वह ठौर है, महा घोर भयमान ।
त्राहि त्राहि पापी करैँ, सुनै न कानों कान ॥१०५॥

॥ चौपाई ॥

बहुतक घोर नरक में पड़े । बहुतक थंभन बाँधे खड़े ॥
बहुतन के सिर आरे धरिये । बहुतक पापी गुरजों[2] गढ़िये ॥
बहुतों का सिर नीचे किया । उपर बाँधि पाँव जो दिया ॥
तले कड़ाहे तेल जलाया । भर भर करछे छौंक लगाया ॥
बहुतन पकरि कुंड में डारे । जिन सिर कागा चोंचन मारे ॥
कह लग कहूँ त्रास बहुतेरे । छप्पन त्रास कहे गुरु मेरे ॥
जम पेरत हैं सकल मँझारी । सबही भुगतैं नर कहा नारी ॥
फिरि फिरि मूँड़ी जाय कुटावै । सहजो कहै नहीँ सकुचावै ॥१०६॥

(१) मकान के गिरने से । (२) गदा ।

॥ दोहा ॥

जम का लिंग सरीर है, पापी लिंग सरीर ।
जैसे कूँ तैसे गहै, वैसी वा कूँ पीर ॥१०७॥
त्रास दहन जम के कहे, सुन भजियो नर नारि ।
अब चौरासी कहत हूँ, भिन्न भिन्न बिस्तार ॥१०८॥

॥ चौपाई ॥

नौलख जल के जीव बताये । बहुत जन्म इन में भुगताये ॥
पंछी जात कही दस लाखा । आयू सूँ चलि आई साखा ॥
ग्यारह लख कृमकीट सखाऊँ । जिमीं माहिँ जो चलत दिखाऊँ ॥
बीस लाख थावर बिस्तारा । भरमत भरमत ही पचि हारा ॥
तीस लाख पसु जोनि सुनाया । घनी बार सो पहिरी काया ॥
चारहु लाख मनुक्खा देही । लख चौरासी यह सुनि लेही ॥
इक इक बार सबै तुम भये । कहिये कहा बहुत दुख सहे ॥
दुख खे खे करि यह तन पायौ । सहजो हरि गुरु बिना गंवायौ ॥
चरनदास गुरु पूरे पाये । चौरासी जम दंड छुटाये ॥१०९॥

नाम का अंग ।

॥ दोहा ॥

लख चौरासी यह कही, फेर फेर भुगतन्त ।
जन्म मरन छूटै नहीँ, बिना सरन भगवन्त ॥ १ ॥
जज्ञ दान तीरथ करै, पूजा भाँति अनेक ।
मुक्ति न पावे सहजिया, बिना भक्ति हरि एक ॥ २ ॥
इन्दर की पदवी मिलै, और ब्रह्म की आव[1] ।
आगे तौ भी मरन है, सहजो सकल बहाव[2] ॥ ३ ॥
राम नाम ले सहजिया, दीजै सर्ब अँकोर[3] ।
तीन लोक के राज लौं, अन्त जाहुगे छोर[4] ॥ ४ ॥

(१) आयू । (२) घूस, रिशवत—यहाँ मतलब न्यौछावर से है । (३) छोड़ । (४) नहाऊ ।

बिना भक्ति थोथे सभी, जोग जज्ञ आचार।
राम[1] नाम हिरदे धरो, सहजो यही बिचार ॥ ५ ॥
यह अवसर दुर्लभ मिलै, अचरज मनुषा देह।
लाभ यही सहजो कहै, हरि सुमिरन करि लेह ॥ ६ ॥
एक घड़ी का मोल ना, दिन का कहा बखान।
सहजो ताहि न खोइये, बिना भजन भगवान ॥ ७ ॥
पारस नाम अमोल है, धनवन्ते घर होय।
परख नहीँ कंगाल कूँ, सहजो डारै खोय ॥ ८ ॥
सहजो जा घट नाम है, सो घट मंगल रूप।
राम बिना धिक्कार है, सुन्दर धनवंत भूप ॥ ९ ॥
सहजो नौका नाम है, चढ़ि[2] के उतरो पार।
राम सुमिरि जान्यो नहीँ, ते डूबे मँझधार ॥१०॥
सहजो भवसागर बहै, तिमिर बरस घन घोर।
ता मेँ नाम जहाज है, पार उतारै तोर ॥११॥
पावक नाम जलाइ है, पाप ताप दुख दुन्द।
राम सुमिरि सहजो कहै, जो बिसरै सो अन्ध ॥१२॥
कनक दान गज दान दे, उनन्चास भू दान।
निस्चै करि सहजो कहै, ना हरि नाम समान ॥१३॥
मेँह सहै सहजो कहै, सहै सीत और घाम।
पर्वत बैठो तप करै, तो भी अधिको नाम ॥१४॥
चरनदास हरि नाम की, महिमा कही अपार।
सो सहजो हिरदे धरी, अचल धारना धार ॥१५॥
सहजो सुमिरन कीजिये, हिरदे माहिँ दुराय[3]।
होठ होठ सूँ ना हिलै, सकै नहीँ कोइ पाय ॥१६॥

(१) नाँव। (२) छिपाकर, गुप्त। (३) गहि गहि।

राम नाम यों लीजिये, जानै सुमिरनहार।
सहजो कै कर्तार ही, जानै ना संसार ॥१७॥
बैठे लेटे चालते, खान पान ब्योहार।
जहाँ तहाँ सुमिरन करै, सहजो हिये निहार ॥१८॥
जागत में सुमिरन करै, सोवत में लौ लाय।
सहजो इकरस ही रहै, तार टूटि नहिं जाय ॥१६॥
आठ पहर सुमिरन करै, बिसरै ना छिन एक।
अष्टादस और चार में, सहजो यही बिसेष ॥२०॥
सहजो सुमिरन सब करैं, सुमिरन माहिं बिबेक।
सुमिरन कोई जानि है, कोटों मद्धे एक ॥२१॥
जन्म मरन बन्धन कटै, टूट जम की फाँस।
राम नाम ले सहजिया, होय नहीं जग हाँस ॥२२॥
चौरासी के दुख छुटैं, छप्पन नर्क तिरास।
राम नाम ले सहजिया, जम पुर मिलै न बास ॥२३॥
गर्भ बास संकट मिटै, जठर अगिन की आँच।
राम नाम ले सहजिया, मुख सूँ बोलो साँच ॥२४॥
सील छिमा संतोष गहि, पाँचो इन्द्री जीत।
राम नाम ले सहजिया, मुक्ति होन की रीति ॥२५॥
काम क्रोध लोभ मोह मद, तजि भज हरि को नाम।
निस्चै सहजो मुक्ति है, लहै अमरपुरधाम ॥२६॥
काम क्रोध मोह लोभ तन, ले सुमिरैं हरि नाम।
मुक्ति न पावै सहजिया, ना रीझैंगे राम ॥२७॥
कामी मति भिष्टल[1] सदा, चलै चाल विपरीत।
सील नहीं सहजो कहै, नैनन माहिं अनीत ॥२८॥

(१) भ्रष्ट, गन्दी।

सदा रहै चित भंग ही, हिरदे थिरता नाहिँ ।
राम नाम के फल जिते, काम लहर बहि जाहिँ ॥२६॥
सहजो क्रोध अति बुरो, उलटी समझै बात ।
सबही सूँ ऐंठो रहै, करै बचन की घात ॥३०॥
कूकर ज्यौं भूसत फिरै, तामस मिलवाँ बोल ।
घर बाहर दुख रूप है, बुधि रहै डाँवा डोल ॥३१॥
मन मैला तन छीन है, हरि सूँ लगै न नेह ।
दुखी रहै सहजो कहै, मोह बसै जा देह ॥३२॥
मोह मिरग काया बसै, कैसे उबरै खेत ।
जो बोवै सोई चरै, लगै न हरि सूँ हेत ॥३३॥
नीच लोभ जा घट बसै, झूठ कपट सूँ काम ।
बौरायो चहुँ दिस फिरै, सहजो कारन दाम ॥३४॥
द्रव्य हेत हरि कूँ भजै, धनही की परतीत ।
स्वारथ ले सब सूँ मिलै, अन्तर की नहिँ प्रीत ॥३५॥
अभिमानी मुल धूर है, चहै बड़ाई आप ।
डिंभ लिये फूलो फिरै, करतो डरै न पाप ॥३६॥
प्रभुताई कूँ चहत है, प्रभु को चहै न कोइ ।
अभिमानी घट नीच है, सहजो ऊँच न होय ॥३७॥

नन्हा महा उत्तम का अंग

॥ दोहा ॥

धन छोटापन सुख महा, धिरग बड़ाई ख्वार[1] ।
सहजो नन्हा हूजिये, गुरु के बचन सम्हार ॥१॥
सहजो तारे सब सुखी, गहैँ[2] चन्द और सूर ।
साधू चाहै दीनता, चहै बड़ाई कूर[3] ॥२॥
अभिमानी नाहर बड़ो, भरमत फिरत उजाड़ ।
सहजो नन्ही बाकरी, प्यार करै सन्सार ॥ ३ ॥

(१) खराब। (२) ग्रहन लगता है। (३) दुष्ट।

सीस कान मुख नासिका, ऊँचे ऊँचे नाँव ।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजे पाँव ॥ ४ ॥
नन्हीँ चीँटी भवन मेँ, जहाँ तहाँ रस लेह ।
सहजो कुंजर अति बड़ो, सिर मेँ डारै खेह ॥ ५ ॥
सहजो चन्दा दूज का, दरस करै सब कोय ।
नन्हे सूँ दिन दिन बढ़ै, अधिको चाँदन होय ॥ ६ ॥
बड़ा भये आदर नहीँ, सहजो आँखिन देख ।
कला सभी घट जायगी, कछू न रहसी रेख ॥ ७ ॥
सहजो नन्हा बालका, महल भूप के जाय ।
नारी परदा ना करै, गोदहि गोद खेलाय ॥ ८ ॥
बड़ा न जाने पाइहै, साहेब के दरबार ।
द्वारे ही सूँ लागि है, सहजो मोटी मार ॥ ९ ॥
बारे दीवे चाँदना, बड़ा भये अँधियार[१] ।
सहजो तृन हलका तिरै, डूबै पत्थर भार ॥१०॥
भली गरीबी नवनता, सकै नहीँ कोइ मार ।
सहजो रुई कपास की, काटै ना तरवार ॥११॥
चरनदास सतगुरु कही, सहजो कूँ यह चाल ।
सकौ तो छोटा हूजिये, छूटै सब जंजाल ॥१२॥
साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंक ।
कुँजर के पग बेड़ियाँ, चीँटी फिरै निसंक ॥१३॥
ऊचे उज्जल भाग सूँ, आय मिले गुरुदेव ।
प्रेम दिया नन्हा किया, पूरन पायो भेव ॥१४॥
सहजो पूरन भाग सूँ, पाय लिये सुखदान ।
नख सिख आई दीनता, भजे बड़ाई मान ॥१५॥

---

(१) दीवा या रोशनी "बढ़ा" देना मुहावरे मे चिराग़ बुझा देने को कहते है— इसी साखी का अर्थ यह है कि नन्हा सा दीवा जब बाला गया तो चाँदनी करता है और जब "बढ़ाया" 'बुझाया' गया तो अँधेरा हो जाता है ।

सहजो पूरन भाग सूँ, पाय लिये सुखदैन।
गये कुलच्छन देह सूँ, सुलछन पायो चैन ॥१६॥
औगुन थे सो सब गये, राज करैं उनतीस[1]।
प्रेम मिला प्रीतम मिला, सहजो वारा सीस ॥१७॥

प्रेम का अंग

चरनदास सतगुरु दियो, प्रेम पिलाया छान।
सहजो मतवारे भये, तुरिया तत गलतान ॥ १ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकनाचूर।
छके रहैं घूमत रहैं, सहजो देख हजूर ॥ २ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, प्रीतम के रँग माहिँ।
सहजो सुधि बुधि सब गई, तन की सोधी नाहिँ ॥ ३ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, पलटि गयो सब रूप।
सहजो दृष्टि न आवई, कहा रंक कहा भूप ॥ ४ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, कहैं बहकते बैन।
सहजो मुख हाँसी छुटै, कबहू टपकै नैन ॥ ५ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, जाति बरन गइ छूट।
सहजो जग बौरा कहै, लोग गये सब फूट ॥ ६ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, नेम धरम गयो खोय।
सहजो नर नारी हँसैं, वा मन आनँद होय ॥ ७ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, सहजो डिगमिग देह[2]।
पाँव पड़ै कितकै किती, हरि सम्हाल जब लेह ॥ ८ ॥
कबहूँ हकधक सो रहै, उठै प्रेम हित गाय।
सहजो आँख मुँदी रहै, कबहूँ सुधि हो जाय ॥९॥
मन में तो आनँद रहै, तन बौरा सब अंग।
ना काहू के संग है, सहजो ना कोइ संग ॥१०॥

---

(१) मन और (२) शरीर।

प्रेम लटक दुर्लभ महा, पावै गुरु के ध्यान।
अजपा सुमिरन कहत हूँ, उपजै केवल ज्ञान ॥११॥

अजपा गायत्री का अंग

ऐसा सुमिरन कीजिये, सहज रहै लौ लाय।
बिनु जिभ्या बिनु तालुवै, अन्तर सुरत लगाय ॥ १ ॥
हन्सा सोहं तार कर, सुरति मकरिया पोय।
उतर उतर फिरि फिरि चढ़ै, सहजो सुमिरन होय ॥ २ ॥
बरत[1] बाँध कर धरन में, कला गगन में खाय।
अर्ध उर्ध नट ज्यों फिरै, सहजो राम रिझाय ॥ ३ ॥
लगै सुन्न में टकटकी, आसन पद्म लगाय।
नाभि नासिका माहिँ करि, सहजो रहै समाय ॥ ४ ॥
सहज स्वाँस तीरथ बहै, सहजो जो कोइ न्हाय।
पाप पुन्न दोनों छुटैं, हरि पद पहुँचे जाय ॥ ५ ॥
हक्कारे[2] उठि नाम सूँ, सक्कारे होय लीन।
सहजो अजपा जाप यह, चरन दास कहि दीन ॥ ६ ॥
सब घट अजपा जाप है, हन्सा सोहं पुर्ष।
सुरत हिये ठहराय के, सहजो या विधि निर्ख ॥ ७ ॥
सब घट व्यापक राम है, देही नाना भेष।
राव रंक चंडाल घर, सहजो दीपक एक ॥ ८ ॥

सत्त वैराग जगत मिथ्या का अंग

॥ दोहा ॥

आतम में जागत नहीं, सुपने सोवत लोग।
सहजो सुपने होत हैं, रोग भोग और जोग ॥ १ ॥
कोटि बरस इक छिन लगै, ज्ञान दृष्टि जो होय।
बिसरि जगत औरै बनै, सहजो सुपने सोय ॥ २ ॥

---

(१) रस्सी। (२) पुकारै।

ऐसे ही सब स्वप्न है, स्वर्ग मितु पाताल।
तीन लोक छल रूप है, सहजो इन्दरजाल ॥ ३ ॥
अज्ञानी जानत नहीं, लिप्त भया करि भोग।
ज्ञानी तो द्रष्टा भये, सहजो खुसी न सोग ॥ ४ ॥
मन माहीं बैराग है, ब्रह्म माहिं गलतान।
सहजो जगत अनित्य है, आतम कूँ नित जान ॥ ५ ॥
सहजो सुपने एक पल, बीते बरस पचास।
आँख खुले सब झूठ है, ऐसे ही घर बास ॥ ६ ॥
मृग तृस्ना जल साँच है, जब लग निकट न जाय।
सहजो तब लग जग बन्यो, सतगुरु दृष्टि न पाय ॥ ७ ॥
जैसे बालक जल बिषे, देखि देखि डरपाय।
समझ भई जब भर्म था, सहजो रहै सिखाय ॥ ८ ॥
ज्ञानी को जग झूठ है, अज्ञानी कूँ साँच।
कोटि लाल कागद लिखे, सहजो बैठा बाँच ॥ ९ ॥
जगत तरैयाँ भोर की, सहजो ठहरत नाहिँ।
जैसे मोती ओस की, पानी अँजुली माँहि ॥१०॥
धूवाँ को सो गढ़ बन्यो, मन में राज सँजोग।
झाँई माई सहजिया, कबहूँ साँच न होय ॥११॥
ऐसे ही जग झूठ है, आतम कूँ नित जान।
सहजो काल न खा सकै, ऐसो रूप पिछान ॥१२॥

सच्चिदानन्द का अंग

॥ दोहा ॥

नया पुराना होय ना, घुन नहिँ लागै जासु।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिँ ब्यापै तासु ॥ १ ॥
किरै[1] घटै छीजै नहीँ, ताहि न भिजवै नीर।
ना काहू के आसरे, ना काहू के सीर ॥ २ ॥

(१) कीड़ा लगै।

रूप बरन वा के नहीं, सहजो रंग न देह।
मीत इष्ट वा के नहीं, जाति पाँति नहिं गेह ॥ ३ ॥
सहजो उपजे ना मरै, सदबासी नहिं होय।
रात दिवस ता में नहीं, सीत ऊस्न नहिं सोय ॥ ४ ॥
आग जलाय सकै नहीं, सस्तर सकै न काटि।
धूप सुखाय सकै नहीं, पवन सकै नहिं आटि[1] ॥ ५ ॥
मात पिता वाके नहीं, नहीं कुटँब को साज।
सहजो वाहि न रंकता, ना काहू को राज ॥ ६ ॥
आदि अन्त ता के नहीं, मध्य नहीं तेहि माहिं।
वार पार नहिं सहजिया, लघू दीर्घ भी नाहिं ॥ ७ ॥
परलय में आवै नहीं, उत्पति होय न फेर।
ब्रह्म अनादी सहजिया, घने हिराने हेर ॥ ८ ॥
जाके किरिया करम ना, षट दर्सन को भेष।
गुन औगुन ना सहजिया, ऐसो पुरुष अलेस ॥ ९ ॥
रूप नाम गुन हूँ रहित, पाँच तत्त सूँ दूर।
चरनदास गुरु ने कही, सहजो छिपा हजूर ॥ १० ॥
आपा खोजे पाइये, और जतन नहिं कोय।
नीर छीर निर्ताय के, सहजो सुरति समोय ॥ ११ ॥

नित्य अनित्य सांख्य मत का अंग

भिन्न भिन्न दोनों करै, वही सांख्य मत भेद।
जीवन और बिदेह सूँ, मुक्ति पाय तजि खेद ॥ १ ॥
जाग्रत और सुषोपती, स्वप्न अवस्था तीन।
काया ही सूँ होत है, घटै बढ़ै है छीन ॥ २ ॥
तुरिया इकरस आतमा, इन तें परे निहार।
इन्द्री मन गहि ना सकै, सहजो तत्त अपार ॥ ३ ॥

(१) उड़ाना, हटाना।

जिभ्या चाखि सकै नहीं, स्रवन सुनै नहिं ताहि ।
नैन विलोकि सकै नहीं, नासा तुचा ना पाय ॥ ४ ॥
अनुभव ही सूँ जानिये, चित्त बुधि थकि थकि जाहिं ।
तीन भाँति हंकार की, सो भी पावै नाहिं ॥ ५ ॥
जनके रस नहिं रूप नहिं, गन्ध नहीं वा ठौर ।
सब्द नहीं अस्पर्स नहिं, सहजो वह कछु और ॥ ६ ॥
गुन तीनौं सूँ है परे, ता में रूप न रेख ।
बोध रूप हो सहजिया, ब्रह्म दृष्टि करि देख ॥ ७ ॥

निर्गुन सर्गुन संशय निवारन भक्ति का अंग

॥ दोहा ॥

निराकार आकार सब, निर्गुन और गुनवन्त ।
है नाहीं सूँ रहित है, सहजो यों भगवन्त ॥ १ ॥
नाम नहीं औ नाम सब, रूप नहीं सब रूप ।
सहजो सब कछु ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ॥ २ ॥
कहा कहूँ कहा कहि सकूँ, अचरज अलख अभेव ।
सुनै अचंभो सों लगै, सहजो ब्रह्म अलेव[1] ॥ ३ ॥
वही आप परगट भयो, ईसुर लीला धार ।
माहिं अजुध्या और बृज, कौतुक किये अपार ॥४॥
चार बीस अवतार धरि, जन की करी सहाय ।
राम कृश्न पूरन भये, महिमा कही न जाय ॥५॥
भक्त हेत हरि आइया, पिरथी भार उतारि ।
साधन की रच्छा करी, पापी डारे मारि ॥६॥
निर्गुन सूँ सर्गुन भये, भक्त उधारन हार ।
सहजो की दंडौत है, ता कूँ बारम्बार ॥७॥
ता के रूप अनन्त हैं, जा के नाम अनेक ।
तो के कौतुक बहुत हैं, सहजो नाना भेष ॥८॥

---

(१) पवित्र ।

गीता में श्रीकृश्न ने, बचन कहे सब खोल।
सब जीवन में मैं बसूँ, कै चर कहा अडोल ॥९॥
मैं अखंड ब्यापक सकल, सहज रहा भर पूर।
ज्ञानी पावै निकट हीं, मूरख जानै दूर ॥१०॥
जोगी पावै जोग सूँ, ज्ञानी लहै बिचार।
सहजो पावै भक्ति सूँ, जाके प्रेम अधार ॥११॥
धन्य जसोदा नन्द धन, धन बृजमंडल देस।
आदि निरंजन सहजिया, भयो ग्वाल के भेष ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

नेत नेत कहि बेद पुकारै। सो अधरन पर मुरली धारै॥
जाकूँ ब्रह्मादिक मुनि ध्यावै। ताहि पूत कहि नन्द बुलावै॥
सिव सनकादिक अन्त न पावै। सो सखियन सँग रास रचावै॥
संजम साधन ध्यान न आवै। सो ग्वालन संग खेल मचावै॥
अनन्त लोक मेटै उपजावै। सो मोहन बृजराज कहावै॥
निर्बिकार निर्भय निर्बाना। कारन भक्त धरे तन नाना॥
निर्गुन सर्गुन भेद न दोई। आदि अन्त मधि एकहि होई॥
गूँगे को सुपनो यह बाता। सहजो कहै कौन के साथा॥१३॥

॥ दोहा ॥

निर्गुन सर्गुन एक प्रभु, देख्यौ समझ बिचार।
सतगुरु ने आँखो दई, निस्चै कियो निहार ॥१४॥
सहजो हरि बहु रङ्ग है, वही प्रगट वहि गूप।
जल पाले में भेद ना, ज्यों सूरज अरु धूप ॥१५॥
चरनदास गुरु की दया, गयो सकल सन्देह।
छूटे बाद बिबाद सब, भई सहज गति लेह ॥१६॥
गुरु बिन मारग ना चलै, गुरु बिन लहै न ज्ञान।
गुरु बिन सहजो धुंध है, गुरु बिन पूरी हान ॥१७॥

जिभ्या चाखि सकै नहीं, स्रवन सुनै नहिं ताहि ।
नैन विलोकि सकै नहीं, नासा तुचा ना पाय ॥ ४ ॥
अनुभव ही सूँ जानिये, चित्त बुधि थकि थकि जाहिं ।
तीन भाँति हंकार की, सो भी पावै नाहिं ॥ ५ ॥
जनके रस नहिं रूप नहिं, गन्ध नहीं वा ठौर ।
सब्द नहीं अस्पर्स नहिं, सहजो वह कछु और ॥ ६ ॥
गुन तीनों सूँ है परे, ता में रूप न रेख ।
बोध रूप हो सहजिया, ब्रह्म दृष्टि करि देख ॥ ७ ॥

निर्गुन सगुन संशय निवारन भक्ति का अंग

॥ दोहा ॥

निराकार आकार सब, निर्गुन और गुनवन्त ।
है नाहीं सूँ रहित है, सहजो यों भगवन्त ॥ १ ॥
नाम नहीं औ नाम सब, रूप नहीं सब रूप ।
सहजो सब कछु ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ॥ २ ॥
कहा कहूँ कहा कहि सकूँ, अचरज अलख अभेव ।
सुने अचंभो सों लगै, सहजो ब्रह्म अलेव[1] ॥ ३ ॥
वही आप परगट भयो, ईसुर लीला धार ।
माहिं अजुध्या और बृज, कौतुक किये अपार ॥४॥
चार बीस अवतार धरि, जन की करी सहाय ।
राम कृश्न पूरन भये, महिमा कही न जाय ॥५॥
भक्त हेत हरि आइया, पिरथी भार उतारि ।
साधन की रच्छा करी, पापी डारे मारि ॥६॥
निर्गुन सूँ सर्गुन भये, भक्त उधारन हार ।
सहजो की दंडौत है, ता कूँ बारम्बार ॥७॥
ता के रूप अनन्त हैं, जा के नाम अनेक ।
तो के कौतुक बहुत हैं, सहजो नाना भेष ॥८॥

---

(१) पवित्र ।

गीता में श्रीकृश्न ने, बचन कहे सब खोल ।
सब जीवन में मैं बसूँ, कै चर कहा अडोल ॥९॥
मैं अखंड ब्यापक सकल, सहज रहा भर पूर ।
ज्ञानी पावै निकट हीं, मूरख जानै दूर ॥१०॥
जोगी पावै जोग सूँ, ज्ञानी लहै बिचार ।
सहजो पावै भक्ति सूँ, जाके प्रेम अधार ॥११॥
धन्य जसोदा नन्द धन, धन बृजमंडल देस ।
आदि निरंजन सहजिया, भयो ग्वाल के भेष ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

नेत नेत कहि बेद पुकारै । सो अधरन पर मुरली धारै ॥
जाकूँ ब्रह्मादिक मुनि ध्यावै । ताहि पूत कहि नन्द बुलावै ॥
सिव सनकादिक अन्त न पावै । सो सखियन सँग रास रचावै ॥
संजम साधन ध्यान न आवै । सो ग्वालन संग खेल मचावै ॥
अनन्त लोक मेटै उपजावै । सो मोहन बृजराज कहावै ॥
निर्बिकार निर्भय निर्बाना । कारन भक्त धरे तन नाना ॥
निर्गुन सर्गुन भेद न दोई । आदि अन्त मधि एकहि होई ॥
गूँगे को सुपनो यह बाता । सहजो कहै कौन के साथा ॥१३॥

॥ दोहा ॥

निर्गुन सर्गुन एक प्रभु, देख्यो समझ बिचार ।
सतगुरु ने आँखो दई, निस्चै कियो निहार ॥१४॥
सहजो हरि बहु रङ्ग है, वही प्रगट वहि गूप ।
जल पाले में भेद ना, ज्यों सूरज अरु धूप ॥१५॥
चरनदास गुरु की दया, गयो सकल सन्देह ।
छूटे बाद बिबाद सब, भई सहज गति लेह ॥१६॥
गुरु बिन मारग ना चलै, गुरु बिन लहै न ज्ञान ।
गुरु बिन सहजो धुंध है, गुरु बिन पूरी हान ॥१७॥

सतगुरु बिन भटकत फिरै, परसत पाथर नीर।
सहजो कैसे मिटत है, जम जालिम की पीर ॥१८॥
पूजे नौग्रह देवता, पित्तर सती अकूत[1]।
सहजो कैसे सुलझिहै, ह्वै रहो सूत कसूत ॥१९॥
गुरु कूँ जानत है नहीं, बनिता सुत के मोह।
साधन की निन्दा करै, हरि सूँ राखै द्रोह ॥२०॥
अनन्य भक्ति उपजे नहीं, गुरु सूँ नाहीं सीर[2]।
सहजो मिले न सिन्ध कूँ, ज्यों तलाब को नीर ॥२१॥
जनक बिदेही परम गुरु, दादा गुरु सुकदेव।
सहजो की डन्डौत है, चरनदास गुरु भेव ॥२२॥

॥ अड़ियल ॥

हरिप्रसाद की सुता, नाम है सहजो बाई ॥
ढूसर कुल में जन्म, सदा गुरु चरन सहाई ॥२३॥
चरनदास गुरुदेव, भेव मोहिं अगम बतायौ ॥
जोग जुगत सूँ दुर्लभ, सुलभ करि दृष्टि दिखायौ ॥२४॥

॥ दोहा ॥

और साधन परनाम करि, कर जोड़ूँ सिर नाय।
यही दान मोहिं दीजिये, भक्ति करूँ चित लाय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

फाग महीना अष्टमी, सुकल पाख बुधवार।
संबत अठारे सैं हुते, सहजो किया सिचार ॥
गुरु अस्तुत के करन कूँ, बढ़्यौ अधिक हुलास।
होते होते हो गई, पोथी सहज प्रकास ॥
दिल्ली सहर सुहावना, परीछितपुर में बास।
तहाँ समाप्त ही भई, नवका सहज प्रकास ॥

(१) अनंत। (२) निज की खेती।

सहज प्रकास पोथी कही, चरनदास परताप।
पढ़ै सुनै की प्रीत सूँ, भाजै सबही पाप॥

सोलह तिथि निर्नय

परनाम करूँ सुकदेव जी, तुम पर वारूँ प्रान।
सोलह तिथि अब कहत हूँ, इन का दीजे ज्ञान॥
चरनदास के चरन कूँ, निस दिन राखूँ ध्यान।
ज्ञान भक्ति और जोग कूँ, तिथि में करूँ बखान॥

॥ कुंडलियाँ ॥

मावस

ममा ररा दो अंक कूँ राखो हिरदे माहिँ।
धर्म राय जाँचै नहीँ लेखा माँगै नाहिँ॥
लेखा माँगै नाहिँ जाय नहिँ जमपुर बंधा।
ऐसे निर्मल नाम को बिसरै सो अंधा॥
टीका चारो वेद का महिमा कही न जाय।
औसर बीत्यो जात है सहजो सुमिर अघाय॥

पड़िवा

पानी का सा बुलबुला यह तन ऐसा होय।
पीव मिलन की ठानिये रहिये ना पड़ि सोय॥
रहिये न पड़ि सोय बहुर नहिँ मनुखा देही।
आपन ही कूँ खोज मिलै जब राम सनेही॥
हरि कूँ भूले जो फिरैँ सहजो जीवन छार।
सुखिया जबही होयगो सुमिरैगो करतार॥

दूज

दोयज धंधा जगत का लागि रहै दिन रैन।
कुटुँब महा दुख देत है कैसे पावै चैन॥
कैसे पावै चैन बिना साधू की संगत।
दुनिया रंग पतंग मजीठी गुरु की रंगत॥

जन्म मरन ता सूँ छुटै सहजो दरसै राम।
चौरासी के दुख मिटैं पावै निजपुर धाम।

तीज

तीज तनिक सुख कारने बहुत फसायो जीव।
लालच लगि ऐसो गिरै जैसे मक्खी घीव॥
जैसे मक्खी घीव डूब करि निकसै नाहीँ।
ऐसे यह नर बूड़ि रहै कुनबे के माहीँ॥
मनुखा देही पाय के सहजो डारी खोय।
जमपुर बाँधे वे चले चौरासी दुख होय॥

चौथ

चौथ चहूँ दिसि तिमिर है महा घोर भयमान।
मूरख जन सोवत तहाँ मिथ्या ते अज्ञान॥
मिथ्या ते अज्ञान सत्य कूँ जानत नाहीँ।
बन बन ढूँढ़त फिरत राम अपने ही माहीँ॥
ज्योँ मिँहदी में रंग है लकड़ी मध्य हु तास।
सहजो काया खोजि ले काहे रहत उदास॥

पाँचै

पाँचौ इन्द्री बस करौ मन जीतन की ठान।
पवन रोक अनहद लगौ पावौ पद निर्बान॥
पावौ पद निर्बान करौ तुम ऐसी करनी।
आसन संजम साध बन्ध लागौ जब धरनी॥
चित मन बुधि हंकार कूँ करौ इकट्ठे आन।
सहजो निज मन होय जब निस्चल लागै ध्यान॥

छट्ठ

छट्ठू कँवल कूँ देख करि सतवेँ में घर छाव।
रसना उलटि लगाय करि जब आगे कूँ धाव॥

जब आगे कूँ धाव देख करि जगमग जोती।
बिन दामिनि चमकार सीप बिन उपजै मोती॥
हन्स हन्स जहँ होत है ओअं ओअं[1] होय।
चरन दास यों कहत हैं सहजो सुरति समोय॥

सातैं

सतसंगत ही कीजिये सत ही कथिये ज्ञान।
सत ही मुख सूँ बोलिये सत ही कीजै ध्यान॥
सत ही कीजै ध्यान हद तजि बेहद लागौ।
तीन अवस्था छोड़ि जाय तुरिया सूँ पागौ॥
निराकार निर्गुन तहाँ इकरस चेतन रूप।
रात दिना सहजो नहीं नहीं छाँह नहिं धूप॥

आठै

आठन कूँ जानै नहीं दस कूँ नाहीं भेद।
चौबीसो समझै नहीं कैसे छूटै खेद॥
कैसे छूटै खेद पंच कूँ जीतै नाहीं।
और पचीसौं संग रहै उनके[2] ही माहीं॥
दोय सदा लागी रहै चौरासी के फेर।
चरनदास यों कहत हैं सहजो आपा हेर॥

नौमी

निन्दा हिन्सा त्याग करि तामस कूँ दे पीठ।
चित कूँ अस्थिर कीजिये नासा आगे दीठ॥
नासा आगे दीठ जहाँ कछु देखौ भाई।
पाँच तत्त दरसायँ और अचरज दरसाई॥
तिरदेवा और आठ सिधि देखौ इन्दर[3] भूप।
चरनदास कहैं सहजिया साधन अधिक अनूप॥

(१) ओओं जहँ। (२) उनही के। (३) चाँद।

दसमी

दसो दिसा भर पूर है ता में यह सब पिंड ।
ज्यों सरवर में बुदबुदे ब्रह्म बीच ब्रह्मंड ॥
ब्रह्म बीच ब्रह्मंड तासु को वार न पारा ।
ऐसो तत्त अगाध नेत कहि निगम पुकारा ॥
चरनदास कहैं सहजिया गुरु से लेवो ज्ञान ।
नैना होहिँ अनन्त ही जब यह पावै जान ॥

एकादसी

ग्यारस गती जो चहत हो तजो जगत की आस ।
कलह कल्पना छाँड़ि के आतम में करि बास ॥
आतम में करि बास खैंच इन्द्री दस लावो ।
मन इस्थिर जब होय सुरति और निरति मिलावो ॥
ध्याता थाके ध्यान में ध्यान ध्येय के माहिँ ।
जनम मरन मिटि सहजिया उपजै बिनसै नाहिँ ॥

द्वादसी

द्वादस दावा दूर करि दावे ही में दुक्ख ।
राग दोष और आपदा अकस निवारै सुक्ख ॥
अकस निवारैं सुक्ख सोहिँ चरनदास दुहाई ।
तामस सब ही त्याग तासु में बहुत भलाई ॥
काम क्रोध मद लोभ कूँ ज्ञान अगिन सूँ जार ।
जब निर्मल ह्वै सहजिया आनँद लहै अपार ॥

तेरस

तेरस तन अचरज महा छिनभंगी छल रूप ।
देखत ही देखत गये कहा रंक कहा भूप ॥
कहा रंक कहा भूप कोई रहने नहिँ पावै ।
इत सूँ सब ही जाहि बहुरि उत सूँ नहिँ आवै ॥

इतने ऊपर घर करै महल दरब सन्तान ।
हाँसी आवै सहजिया ये मूरख मस्तान ॥

चौदस

चौरासी भुगती घनी बहुत सही जम मार ।
भरम फिरे तिहु लोक में तहू न मानी हार ॥
तहू न मानी हार मुक्ति की चाह न कीन्ही ।
हीरा देही पाय मोल माटी के दीन्ही ॥
मूरख नर समझै नहीं समझाया बहु बार ।
चरनदास कहैं सहजिया सुमिरै ना करतार ॥

पूनो

पूनो पूरा गुरु मिलै मेटै सब सन्देह ।
सोवत सूँ चेतन्न होय देखै जाग्रत गेह ॥
देखै जाग्रत गेह जहाँ सूँ सुपने आयो ।
जग कूँ जान्यो साँच रूप अपनो बिसरायो ॥
चरनदास कहैं सहजिया गुरु चरनन चित लाव ।
तिमिर मिटै अज्ञान कूँ ज्ञान चाँदनो पाव ॥

॥ दोहा ॥

सोलह तिथि पूरन भई, सहजो करी बखान ।
चरनदास की दया सूँ, मिटौ सकल अज्ञान ॥
लिखै पढ़ै सुनै प्रीति सूँ, ता को पाप नसाहि ।
और ऐसी करनी करै, मुक्ति रूप है जाहि ॥

॥ सात वार निर्नय ॥

॥ दोहा ॥

नमो नमो सुकदेव जी, तुम्हरी सरन गही ।
मेरे सिर पर हाथ धरि, चरनों लागि रही ॥
सात वार बरनन करूँ, कुँडली माहिँ उचार ।
याही मुख सूँ कहत हूँ, तुम कूँ हिरदे धारि ॥

॥ कुंडलिया ॥

(१)

मंगल माली राम है, जाका यह जग बाग ।
निस दिन ताही में रहै, वा ही सेती लाग ॥
वा ही सेती लाग, करी जिन यह गुलजारी ।
पात पात की खबर, डाल सब लागै प्यारी ॥
आपन ही कूँ जानि लै, वाही ठौर का फूल ।
चरनदास कहै सहजिया, ऐसै समझो कूल ॥

(२)

बुध वारी में फल घने, जो पै देवै बाड़ ।
रखवारी के बिन किये, पाँचौ करै उजाड़ ॥
पाँचौ करै उजाड़, पचीसौ चरि चरि जाईं ।
सावधान जो होय, सोई वा के फल खाई ॥
चरनदास कहै सहजिया, ऐसे समुझ बिचार ।
तेरी काया में खिले, भाँति भाँति गुलजार ॥

(३)

बृहस्पति वारी आइया, पाई मनुषा देह ।
सो तन छिनछिन घटत है, भयौ जात है खेह ॥
भयौ जात है खेह, बहुरि लाहा कब लैहौ ।
बेगहिँ समुझ सँभार, नहीँ बहुतै पछितैहौ ॥
आगा पीछा क्या करै, सकल बासना त्याग ।
चरनदास कहै सहजिया, हरि सुमिरन कूँ लाग ॥

(४)

सुक्कर सर[1] उपदेस का, लगा कलेजे नाहिँ ।
ते नर पसू समान हैँ, या दुनियाँ के माहिँ ॥
या दुनियाँ के माहिँ, सदा चक्कर में डोलैँ ।
आवा गौन दुख सहा, तासु की गाँठि न खोलैँ ॥

---

(१) बान, तीर ।

ऐसे मूरख बावरे, भोंदू मुग्ध[1] गँवार।
चरनदास कहै सहजिया, भरमैं बारंबार॥

(५)

थावर[2] थिर करतार है, और सकल मिटि जाय।
जा तें सूमति प्रीति करि, रहते चित्त लगाय॥
रहते चित्त लगाय, तासु ने जग उपजाया।
वा की सरनै आय, करै बहु बिधि की छाया॥
ऐसा हरि का नाम है, जनम मरन मिटि जाय।
चरनदास कहै सहजिया, साचे सूँ लौ लाय॥

(६)

एत[3] जो आये जगत में, हरि सुमिरन के काज।
ह्याँ कुछ कीया और ही, नेक न आई लाज॥
नेक न आई लाज, साज सब खोटे कीन्हे।
सदा रहे अज्ञान, राम घट में नहिं चीन्हे॥
जैहो जनम गँवाय के, पछितावा रहि जाय।
चरनदास कहै सहजिया, कहा कियो तन पाय॥

(७)

सोम सिरीपति[4] सेइये, गुरु की आयस[5] लेय।
सतसंगति अचरज कथा, ताही में मन देय॥
ताही में मन देय, और ऊँचा नहिं या तें।
और सकल धर्म उरै[6], सभी थोथी हैं बातैं॥
चरनदास कहै सहजिया, भक्ति सिरोमनि जान।
तन धन चित बुध प्रान कूँ, ता में दीजे आन॥

॥ दोहा ॥

सात वार ये मैं कहे, जा में हरि का भेद।
जो कोइ समुझै प्रीति सूँ, छूटै सबही खेद॥

---

(१) मूर्ख। (२) अडोल। (३) इत, यहाँ। (४) श्रीपति=विष्णु।
(५) आज्ञा। (६) वरे, पीछे।

सातो वारों बीच में, जग उपजै मिटि जाय।
सहजो बाई हरि जपौ, आवागवन नसाय॥

मिश्रित पद

॥ राग गौरी ॥

नमो नमो गुरु तुम सरना।
तुम्हरे ध्यान भरम भय भागैं, जीते पाँचौ और मना॥ १॥
दुख दारिद्र मिटैं तुम नाऊँ, कर्म कटैं जो होहिं घना।
लोक परलोक सकल विधि सुधरैं, पग लागैं आय ज्ञान गुना॥२॥
चरन छुए सब गति मति पलटैं, पारस जैसे लोह सुना[1]।
सीप परसि स्वाँती भयो मोती, सोहत है सिर राज रना॥३॥
ब्रह्म होय जीव बुधि नासै, जब कैसो होना मरना।
अमर होय अमरापद पावै, यह गुन कहियै गुरु बचना॥४॥
चरनदास गुरु पूरे पाये, जग का दुख सुख क्यों सहना।
सहजो बाई व्याध छुटा कर, आनँद मंगल में रहना॥५॥

॥ राग सोरठ ॥

(१)

हमारे गुरु बचनन की टेक।
आन धरम कूँ नाहिं जानूँ, जपूँ हरि हरि एक॥ १॥
गुरु बिना नहिं पार उतरौ, करौ नाना भेख।
रमौ तीरथ बर्त राखौ, होहु पंडित सेख॥ २॥
गुरु बिना नहिं ज्ञान दीपक, जाय ना अँधियार।
काम क्रोध मद लोभ माहीं, उरझिया संसार॥ ३॥
चरनदास गुरु दया करि कै, दिये मन्तर कान।
सहजो घट परगास हूवा, गयौ सब अज्ञान॥ ४॥

(२)

भया हरि रस पी मतवारा।
आठ पहर झूमत ही बीतै, डार दिया सब भारा॥ १॥

---

(१) सोना।

इड़ा पिँगला ऊपर पहुँचे, सुखमन पाट उघारा।
पीवन लगे सुधारस जब ही, दुर्जन पड़ी बिडारा॥ २ ॥
गंग जमन बिच आसन मार्‌यौ, चमक चमक चमकारा।
भँवर गुफा में दृढ़ ह्वै बैठे, देख्यो अधिक उजारा॥ ३ ॥
चित इस्थिर चंचल मन थाका, पाँचौ का बल हारा।
चरनदास किरपा सूँ सहजो, भरम करम हुए छारा॥ ४ ॥

॥ राग मलार ॥

(१)

हमारे गुरु पूरन दातार।
अभय दान दीनन को दीन्हे, कीन्हे भवजल पार॥ १ ॥
जन्म जन्म के बन्धन काटे, जम की बंध निवार।
रंक हुते सो राजा कीन्हे, हरि धन दियौ अपार॥ २ ॥
देवैँ ज्ञान भक्ति पुनि देवैँ, जोग बतावनहार।
तन मन बचन सकल सुखदाई, हिरदे बुधि उँजियार॥ ३ ॥
सब दुख-गंजन पातक-भंजन, रंजन ध्यान बिचार।
साजन दुर्जन जो चलि आवैं, एकहि दृष्टि निहार॥ ४ ॥
आनद रूप सरूप मई है, लिप्त नहीँ संसार।
चरनदास गुरु सहजो के रे, नमो नमो बारम्बार॥ ५ ॥

(२)

अस जन धन जननी जिन जाये।
दूसर कुल में भक्ति नहीँ थी, जा कूँ तारन आये॥ १ ॥
कारन परमारथ तन धार्‌यौ, बहुतक जीव उबारे।
खेवट ह्वै भवसागर माहीँ, सरन लगे सो तारे॥ २ ॥
मुक्ति सरूप भूप मन जोते, आसा सकल जराये।
भक्ति खेत में लोभ खरतवा[1], ता कूँ रहन न पाये[2]॥ ३ ॥

(१) मोथा घास जिसकी जड़ लम्बी होती है। (२) लाये।

ज्ञान जोग को सूरज प्रगट्यो, ध्यानी किरन पसारी ।
चार दिसा में भयो उजारी, चौंक उठे नर नारी ॥ ४ ॥
प्रेम झलाझल नैनन माहीं, हिरदे सीतलताई ।
नख सिख सील सँतोष छिमा हीं, बरनै सहजो बाई ॥ ५ ॥

(३)

सखीरी आज धन धरती धन देसा ।
धन डहरा मेवात मँझारे, हरि आये जन भेसा ॥ १ ॥
धन भादों धन तीज सुदी है, धन दिन मंगलकारी ।
धन दूसर कुल बालक जनम्यो, फुल्लित भये नर नारी ॥ २ ॥
धन धन माई कुंजो रानी, धन मुरलीधर ताता ।
अगले दत्तव[1] अब फल पाये, तिन के सुत भयो ज्ञाता ॥ ३ ॥
भरम नसावन भक्ति बढ़ावन, बहु पारायन[2] करता ।
सब फल दायक सब कुछ लायक, अघमोचन दुख हरता ॥ ४ ॥
अनगिन बरस बहुत चिरजीवो, गुरु सुकदेव सहाई ।
सहजो बाई देत असीसैं, पावै दरस बधाई ॥ ५ ॥

(४)

सखीरी आज जन्मे लीला धारी ।
तिमिर भजैगो भक्ति खिड़ैगी[3], पारायन नर नारी ॥ १ ॥
दर्सन करते आनँद उपजै, नाम लिये अघ नासै ।
चर्चा में सन्देह न रहसी, खुलिहै प्रबल प्रगासै ॥ २ ॥
बहुतक जीव ठिकानो पैहैं, आवागवन न होई ।
जम के दंड दहन पावक की, नित कूँ मूल निकोई[4] ॥ ३ ॥
होइ है जोगी प्रेमी ज्ञानी, ब्रह्म रूप ह्वै जाई ।
चरनदास परमारथ कारन, गावै सहजो बाई ॥ ४ ॥

(५)

सखीरी आज जन्म लियो सुखदाई ।
दूसर कुल में प्रगट हुए हैं, बाजत अनँद बधाई ॥ १ ॥

---

(१) शुभ करनी । (२) परिपूर्ण । (३) खिलैगी । (४) उखाड़ दिया ।

भादों तीज सुदी दिन मंगल, सात घड़ी दिन आये ।
सम्बत सत्रहसाठ[1] हुते तब, सुभ समयो सब पाये ॥ २ ॥
जैजैकार भयो मधि गाऊँ, मात पिता मुख देखो ।
जानत नाहिँन कौन पुरुष हैं, आये हैं नर भेखो ॥ ३ ॥
संग चलावन अगम पन्थ कूँ, सूरज भक्ति उदय को ।
आप गुपाल साध तन धार्यो, निहचै मो मन ऐसो ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव नाँव धरि दीन्ह्यो, चरनदास उपकारी ।
सहजो बाई तन मन वारै, नमो नमो बलिहारी ॥ ५ ॥

(६)

सखीरी आज आनँद देव बधाई ।
सतगुरु ने औतार लियो है, मिलि मिलि मंगल गाई ॥ १ ॥
अद्भुत लीला कहा बखानौँ, मो पै कही न जाई ।
बहु विधि बाजे बाजन लागे, सुनत हिया हुलसाई ॥ २ ॥
धन भादोँ धन तीज सुदी है, जा दिन प्रगटे आई ।
धन धन कुंजो भाग तिहारे, चरनदास सुत पाई ॥ ३ ॥
कलिजुग में हरिभक्ति चलाई, जन की करैं सहाई ।
श्री सुकदेव करी जब किरपा, गावै सहजो बाई ॥ ४ ॥

॥ राग बिलावल ॥

(१)

मुकट लटक अटकी मन माहीँ ।
नृत तन नटवर मदन मनोहर, कुंडलझलक अलक[2] बिथुराई ॥ १ ॥
नाक बुलाक हलत मुक्ताहल, होठ मटक गति भौंह चलाई ।
ठुमकठुमक पग धरत धरनि पर, बाँह उठाय करत चतुराई ॥ २ ॥
झुनक झुनक नूपुर झनकारत, तताथेई थेई रीझ रिझाई ।
चरनदास सहजो हिये अन्तर, भवन करो जित रहो सदाई ॥ ३ ॥

---

(१) सत्रह सौ साठ । (२) घुँघराली लटैं ।

(२)

हरि बिनु तेरो ना हितू, कोइ या जग माहीँ ।
अन्त समय तू देखि ले, कोइ गहै न बाँहीँ ॥१॥
जम सूँ कहा छुटा सकै, कोइ संग न होई ।
नारी हू फटि रहि गई, स्वारथ कूँ रोई ॥२॥
पुत्र कलित्तर कौन के, भाई अरु बन्धा ।
सब ही ठोक जलाइ हैं, समझै नहिं अन्धा ॥३॥
महल दरब ह्याँ ही रहे, पचि पचि करि जोड़ा ।
करहा गज ठाढ़े रहैं, चाकर और घोड़ा ॥४॥
पर काजे बहु दुख सहे, हरि सुमिरन खोया ।
सहजो बाई जम घिरै[1], सिर धुनि धुनि रोया ॥५॥

॥ राग काफी ॥

नैनों लख लैनी साईं तैंड़े हजूर ।
आगे पीछे दहिने बायें, सकल रहा भरपूर ॥१॥
जिन को ज्ञान गुरू को नाहीं, सो जानत हैं दूर ।
जोग जज्ञ तीरथ ब्रत साधैं, पावत नाहीँ कूर ॥२॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जिमीं में, सोई हरि का नूर ।
चरनदास गुरु मोहिं बतायो, सहजो सब का मूर ॥३॥

॥ राग असावरी ॥

बाबा काया नगर बसावौ ।
ज्ञान दृष्टि सूँ घट में देखौ, सुरति निरति लौ लावौ ॥१॥
पाँच मारि मन बास कर अपने, तीनौँ ताप नसावौ ।
सत सन्तोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भजावौ ॥२॥
सील छिमा धीरज कूँ धारौ, अनहद बंब बजावौ ।
पाप बानिया रहन न दीजे, धरम बजार लगावौ ॥३॥
सुबस बास होवै जब नगरी, बैरी रहै न कोई ।
चरनदास गुरु अमल बतायो, सहजो सँभलौ सोई ॥४॥

---

(१) जब जम ने घेर लिया ।

॥ राग वसंत ॥

आयो बसंत धन मेरे भाग। पाँचो गावैं एक राग ॥१॥
और पचीसौं उनके संग। सो भी भीँगे सरस रंग ॥२॥
मतवारे भये मन से भूप। सखि बिसरीं सब अपना रूप ॥३॥
नगर लोग नहिं तन सँभार। मगन भये सब बार बार ॥४॥
कह्यो न जाय उपज्यो अनन्द। और खेल सब भये मन्द ॥५॥
तिरबेनी तट करि बिहार। पीवत बठे अमी धार ॥६॥
जोति बाल पूजे सुदेव। अगम अगोचर पायो भेव ॥७॥
सीस भेँट जो दीन्हो जाय। दरसन कीन्हे अति अघाय ॥८॥
चरनदास गुरु दई सैन। सहजो बाई पायो चैन ॥९॥

॥ राग होरी धनासरी ॥

(१)

साधो मन माया के संग, सब जग रंग रह्यो ॥टेक॥
मूरख पचे खेल के अंधरे, नाना स्वाँग बनाय।
आसा धरि धरि नाचन लागे, चोवा चाह लगाय ॥१॥
जोग करैं सिधि आठौं चाहै, मान बड़ाई हेत।
राज बासना भोग लोक के, कासी करवत लेत ॥२॥
पंच अगिन बहु तापन लागे, बहुत अर्धमुख भूल।
बहुतक दौड़ें अठसठ तीरथ, ज्ञान गली गये भूल ॥३॥
चरनदास गुरु तत्त लखायो, दीन्हे खेल छुटाय।
सहजो बाई सीस निवावत, बार बार बलि जाय ॥४॥

(२)

मैं तो खेलूँ प्रभु के संग, होरी रंग भरी।
जित देखूँ तित रमि रहो रे, सब में व्यापक है हरी ॥१॥
सब कुछ भयो दियो सुख जन कूँ, अद्भुत लीला है करी।
नाना जतन किये मिलवे कूँ, प्रीतम पायो हम घरी[1] ॥२॥

(१) घर ही में।

॥ राग होरी ॥

सुमिर सुमिर नर उतरो पार, भौसागर का तीछन धार ॥टेक॥
धर्म जिहाज माहिँ चढ़ि लीजै, सँभल सँभल ता मैँ पग दीजै ।
स्रम करि मन को संगी कीजै, हरि मारग को लागो यार ॥१॥
बादवान पुनि ताहि चलावै, पाप भरै तो हलन न पावै ।
काम क्रोध लूटन को आवै, सावधान ह्वै करो सँभार ॥२॥
मान पहाड़ी तहाँ अड़त है, आसा तृस्ना भँवर पड़त है ।
पाँच मच्छ जहँ चोट करत हैँ, ज्ञान आँखि बल चलो निहार ॥३॥
ध्यान धनी का हिरदे धारै, गुर किरपा सूँ लगै किनारे ।
जब तेरी बोहित उतरै पारे, जन्म मरन दुख बिपता टार ॥४॥
चौथे पद मेँ आनँद पावै, या जग मेँ तू बहुरि न आवै ।
चरनदास गुरदेव चितावैँ, सहजो बाई यही विचार ॥५॥

॥ राग ललित ॥

जाग जाग जो सुमिरन करै । आप तरै औरन लै तरै ॥टेक॥
हरि की भक्ति माहिँ चित देवै । पद पंकज बिन और न सेव ।
आन धरम कूँ संग न लेवै । फलन कामना सब परिहरै ॥१॥
काल ज्वाल सबही छुट जावै । आवा गवन की डोरि नसावै ।
जोनी संकट फिरि नहिँ आवै । बार बार जनमै नहिँ मरै ॥२॥
उँची पदवी जग मेँ पावै । राजा राना सीस नवावै ।
तन छूटे जा मुक्ति समावै । जो पै ध्यान धनी का धर ॥३॥
ह्याँ पै सुख जो जानै कूरा । गुर चरनन मेँ लागै पूरा ।
बेग सम्हारै जो जन सूरा । चरनदास सहजो हो अरै ॥४॥

॥ राग बिलावल ॥

तुम गुनवंत मैँ औगुन भारी ।

तुम्हरी ओट खोट बहु कीन्हे, पतित उधारन लाल बिहारी ॥१॥
खान पान बोलत अरु डोलत, पाप करत है देह हमारी ।
कर्म बिचारौ तौ नहिँ छूटौँ, जो छूटौँ तो दया तुम्हारी ॥२॥

मैं अधीन माया बस हो करि, तुव सुधीन माया सूँ न्यारे।
मैं अनाथ तुम नाथ गुसाईं, सब जीवन के प्रान पियारे ॥३॥
भौसागर में डर लागत मोहिँ, तारो बेगहि पार उतारी।
चरनदास गुर किरपा सेती, सहजो पाई सरन तिहारी ॥४॥

॥ राग ईमन ॥

ज्यों त्यों राम नाम ही तार।
जान अजान अग्नि जो छूवै, वह जारै पै जारै ॥ १ ॥
उलटा सुलटा बीज गिरै ज्यौं, धरती माहीं कैसै।
उपजि रहै निहचै करि जानो, हरि सुमिरन है ऐसै ॥ २ ॥
बेद पुरानन में मथि काढ़ा, राम नाम तत सारा।
तीन कांड[1] में अधिकी जानो, पाप जलावन हारा ॥ ३ ॥
हिरदा सुद्ध करै बुधि निरमल, ऊँची पदवी देवै।
चरनदास कहैं सहजो बाई, व्याधा सब हरि लेवै ॥ ४ ॥

॥ राग रामकली ॥

अब तुम अपनी ओर निहारो।
हमरे औगुन पै नहिँ जाओ, तुमहीं अपना बिरद सम्हारो ॥१॥
जुग जुग साख तुम्हारी ऐसी, वेद पुरानन गाई।
पतित-उधारन नाम तुम्हारो, यह सुनके मन दृढ़ता आई ॥२॥
मैं अजान तुम सब कछु जानो, घट घट अंतरजामी।
मैं तो चरन तुम्हारे लागी, हो किरपाल दयालहि स्वामी ॥३॥
हाथ जोरि के अरज करत हौं, अपनाओ गहि बाहीँ।
द्वार तिहारे आय परी हौं, पौरुष गुन मो मे कछु नाहीँ ॥४॥
चरनदास सहजिया तेरी, दरसन की निधि पाऊँ।
लगन लगी अरु प्रान अड़े हैं, तुमको छोड़ कहो कित जाऊँ ॥५॥

॥ राग भैरो ॥

हम बालक तुम माय हमारी। पल पल माहिँ करो रखवारी॥१॥

---

(१) लोक।

निस दिन गोदी ही में राखो। इत चित बचन चितावन भाखो॥२॥
बिषै ओर जान नहिँ देवो। दुर दुर जाउँ तो गहि गहि लेवो॥३॥
मैं अनज्ञान कछू नहिँ जानूँ। बुरी भली को नहिँ पहिचानूँ॥४॥
जैसो तैसो तुमहीँ चीन्हेव। गुरु ह्वै ध्यान खेलौना दीन्हेव॥५॥
तुम्हरी रच्छा ही से जीऊँ। नाम तुम्हारो इमृत पीऊँ॥६॥
दिष्टि तिहारी ऊपर मेरे। सदा रहूँ मैं सरनै तेरे॥७॥
मारो झिड़को तौ नाहिँ जाऊँ। सरक सरक तुमहीँ पै आऊँ॥८॥
चरनदास है सहजो दासी। हो रिच्छक पूरन अबिनासी॥९॥

॥ राग सोरठ ॥

जग में कहा कियो तुम आय।
स्वान की ज्यों पेट भरिकै, सोवो जन्म गँवाय॥ १ ॥
पहर पिछले नाहिँ जागो, कियो ना सुभ कर्म।
आन मारग जाय लागो, लियो ना गुरु धर्म॥ २ ॥
जप न कीयो तप न साधो, दियो ना तैं दान।
बहुत उरझो मोह मद में, आपु काया मान॥ ३ ॥
देह घर है मौत का रे, आन काढ़ै तोहि।
एक छिन नहिँ रहन पावै, जब कैसे कुछ होय॥ ४ ॥
रैन दिन आराम ना, काटै जो तेरी आव।
चरनदास कहैं सुन सहजिया, अब करौ भजन उपाव॥ ५ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

सठ तजि नाँव जगत सँग राचो।
जेहि कारन बहु स्वाँग कछे हैं, चौरासी तन धरि धरि नाचो॥१॥
गर्भ माहिँ जे बचन किये थे, एकहु बार भयो नहिँ साचो।
स्वारथ ही को उठि उठि धावै, राम भजन परमारथ काचो॥२॥
संतन की टकसाल चढ़ो ना, गुरु की हाट कबहुँ नहिँ जाँचो।
पंच बिषै के मद में मातो, अभिमानी ह्वै बहुतक नाचो॥३॥

जम द्वारे की लाज न मानी, नरक अगिन की सहि सहि आँचो।
चरनदास कहै सहजो बाई, हरि की सरन बिना नहिं बाचो ॥४॥

॥ राग सारँग ॥

(१)

हमरे औषध नाँव धनी का।
आध व्याध तन मन की खोवै, सुद्ध करे वह नीका ॥ १ ॥
अमर भये जिन जिन यह खाई, भव नगरी नहिँ आये।
जो पछ करै सँभल दृढ़ राखै, सतगुर बैद बताये ॥ २ ॥
सतसंगत को भवन बनावै, पड़दा लाज लगावै।
जगत बासना पवन चलत है, सो आवन नहिँ पावै ॥ ३ ॥
सूभ करम लै टेक टहलुवा, दीपक ज्ञान जलाव।
नित्य अनित्य बिचार सार गहु, हो आसार बगावै ॥ ४ ॥
जीव रूप के रोग भगैँ यौँ, ब्रह्म रूप है जावै।
सहजो बाई सुन हुलसावै, चरनदास बतलावै ॥ ५ ॥

(२)

तेरी लीला अधिक सोहावनी।
देखि देखि मन हुलसत है, संतन के मन भावनी ॥ १ ॥
तत गुन करि ब्रह्मंड बनायो, अधर धर्यो अचरज भयो।
जाके मध्य यही संसारा, भाँति भाँति रँग रँग ह्यो ॥ २ ॥
सात दीप नौ खंड रचे हैँ, सुरग मिरत पाताल हीँ।
इच्छा करत सबै बनि आयो, होइ गयो ततकाल हीँ ॥ ३ ॥
माया अगम अपार तुम्हारी, बरन सकै कहा बेद है।
तीन गुनन तक बुध पहुँचत है, परे तुम्हारो भेद है ॥ ४ ॥
छिन मेँ उतपति परलै छिन मेँ, जो चाहो सब कुछ बनै।
चरनदास गुरु इष्ट देइ जस, गुनाबाद सहजो भनै ॥५॥

(३)

परो मन हार गुन गावत बान।
बिन गोपाल और जो भाखै, तौ तोहि गुर की आन ॥ १ ॥

बेद माहिँ ब्रह्मा गुन गावै, संकर सींगी माहिँ ।
सेस सहस मुख निस दिन गावै, समौ बिचारत नाहिँ ॥ २ ॥
बीन लिये नारद मुनि गावैँ, गावैँ व्यास उचार ।
गनपति सारद गान करत हैं, गंधर्व सभी पुकार ॥ ३ ॥
गुनाबाद गावत प्रभु परसन, बड़े भक्त को भाव ।
सुकदेव गाव चरन हीँ दासा, सहजो कूँ भी चाव ॥ ४ ॥

॥ राग पुरबी ॥

(१)

हरि कौ कोइ न जानत भेद ।
सब के बड़े सोई पचि हारे, नेत नेत कहि बेद ॥ १ ॥
नाल माहिँ ब्रह्मा नहिँ आयो, थाकि फिरत केहि कौन ।
जोग ध्यान करि संकर हारे, थाह लेत भये लीन ॥ २ ॥
भेद न पायो सेस सारदा, सुरपति और गनेस ।
बामदेव और सनकादिक, निरे भक्त के भेस ॥ ३ ॥
ज्ञानी गुनी मुनी रिषि तेते, जेते जोगेसुर साध ।
चरनदास कह सहजो बाई, पंडित पोथी लाद ॥ ४ ॥

(२)

मन तोहि कब उपजैगी ग्यान ।
इंद्रिन के रस सूँ छुटि निर्मल, पारब्रह्म गलतान ॥ १ ॥
जग सूँ पीठ कहो कब देहौ, सनमुख हरि की ओर ।
साधोँ की संगत कब करिहौ, कुल कुटुंब को छोड़ ॥ २ ॥
जप करिबे को कब तुम लागिहौ, चरन कमल के ध्यान ।
निस दिन आयु घटै तन छीजै, मनुष जनम की हान ॥ ३ ॥
तुम जो कहो मैँ काल्ह करूँगो, काल्ह काल के हाथ ।
जा कारन ऐसी मति उपजै, सो झूठा है साथ ॥ ४ ॥
चरनदास गुरु मोहिँ बतायो, सहजो हिरदे राख ।
भजनहिँ एक सार वस्तु है, सब मिलि बेद पुरानन भाख ॥ ५ ॥

॥ राग बिलावल ॥

गुविँद गुन क्योँ नहिँ गावो ।
ममता नीँद कहा मन सूतो, जाग जाग हरि सोँ चित लावो ॥१॥
गुन गावत बहु पतित ऊधरे, ऊँची पदवी दीन्ही ।
जाति बरन सूँ ऊपर कीन्ही, आध ब्याध बिपता हरि लीन्ही ॥२॥
भौजल पार भये थिर हूए, आवागवन नसायो ।
वैसोही तुम्हरी गति होगी, करिजै औसर नीको पायो ॥३॥
आधी रात औ तरुन अवस्था, उठि करि ध्यान लगावै ।
ता की अस्तुति सेस करत है, सिव ब्रह्मादिक सीस नवावै ॥४॥
चरनहिँ दास बनो पद सेवौ, गुरु उपदेस सँभारो ।
सहजो नवधा भक्ति करीजै, आप तिरो औरन कूँ तारो ॥५॥

॥ राग जैजैवंती ॥

(१)

दसौं दिसा देख तो कूँ और कोई नाहीँ ।
नख सिख राज रह्यो, वेदन के मद्ध कह्यो ।
सूत रह्यो की माला भयो, ऐसे ही सब माहीँ ॥१॥
सिंध हूँ की लहरैँ जानो, ता मेँ सब पानी मानो ।
ऐसे नहिँ दूजा ठानो, साईँ साईँ साईँ ॥२॥
ईसुर को रूप छयो, ब्रह्मंड सब होइ रह्यो ।
नान्ह ही सरूप ह्यो, तेरी गति पाई ॥३॥
चरनदास गुरू दई, आतम बिचार लई ।
सहजो बाई नाहिँ रही, जैसे जल झाईँ ॥४॥

(२)

मेरे इक सिर गोपाल और नहीँ को आई ॥टेक॥
आइ बैस हिये माहिँ, और दूजा ध्यान नाहिँ ।
मेरे तो सर्वस उन, औ हिताई वोई ॥१॥
जाति हूँ की कान तजी, लोक हूँ की लाज भजी ।
दोनौं कुल माहिँ बजी, कहा करै सोई ॥२॥

उघरी है प्रीत मेरी, निहचै हुई वा की चेरी।
पहिरि हिये प्रेम बेरी, टूटै नहीँ जोई ॥३॥
मैँ जो चरनदास भई, गति मति सब खोइ दई।
सहजो बाई नहीँ रही, उठि गई दोई ॥४॥

॥ राग परज ॥

तेरी गति किनहुँ न जानी हो।
ब्रह्मा सेस महेसुर थाके, चारो बानी हो ॥१॥
बाद करंते सब मत थाके, बुद्धि थकानी हो।
बिद्या पढ़ि पढ़ि पंडित थाके, अरु ब्रह्मज्ञानी हो ॥२॥
सब के परे जु अनभय हारी, थाह न आनी हो।
छान बीन करि बहुतक थाकी, हुई खिसानी हो ॥३॥
सुर नर मुनि जन गनपति थाके, बड़े बिनानी हो।
चरनदास थका सहजो बाई, भई सिरानी हो ॥४॥

(२)

तेरी गति सब मैँ जानी हो ॥१॥
बिधि निषेध करि देखा तो कूँ, लिया पिछानी हो ॥ २ ॥
तत पद त्वं पद असि पद तूहीँ, यह न लुकानी हो ॥ ३ ॥
तो बिन दूजा नेक न कयौँ ही, यह मन आनी हो ॥ ४ ॥
चरनदास नहिँ सहजो बाई, दुबिधा मानी हो ॥ ५ ॥

॥ राग कडखा ॥

करी मोहिँ दास जो आपनी जानि कै,
राखियो दृष्टि तुम सदा नीको।
और कोइ आसरो धरूँ ना जगत मैँ,
मानियो साच मैँ कहूँ ठीको ॥ १
तुही मात औ पिता बंधु तुही,
तुही कुल नात है गोत मेरा।
तुही धन धाम औ जीव इस देह का,
तो बिना और दूजा न हेरा ॥ २

जाप तेरा करूँ ध्यान हिरदे धरूँ,
समुझि कै ज्ञान तो कूँ पिछानूँ।
सरन तेरी लई टेक ऐसी गही,
तुम बिना आन कूँ नाहिँ जानूँ ॥ ३ ॥
गही जब बाँह विख्यात जग में भई,
सकल लज्जा तुम्हैं है गोसाईं।
कलू[1] के काल[2] में महा भयमान हूँ,
चरन हूँ कवल की राखि छाईं ॥ ४ ॥
कहत सहजो दोऊ हाथ को जोरि कै,
सीस नीचा किये दीन धारे।
चरनदास गुरु अरज सुनि लीजिये,
तुही है इष्ट आसा हमारे ॥ ५ ॥

॥ इति सहज प्रकाश की पोथी संपूर्ण ॥

पाठकों से निवेदन है कि कृपया अपनी पुस्तकों मे जो अशुद्धियाँ छूट गई हैं उनको इस सूची के अनुसार शुद्ध करले। इसके लिये मुझे बड़ा दुःख है कि प्रेस में छपते समय यह भूल सुधारी न जासकी जिसके वास्ते पाठक क्षमा करेंगे।

सम्पादक
संतबानी पुस्तकमाला

शुद्धी-पत्र

सहजो बाई की बानी

पृष्ठ नं०	पंक्ति नं०	अशुद्ध	शुद्ध
४	१२	सर्ब सवारै	सर्वस वारै
६	७	हरसो	परसे
७	६	करना	करनी
७	११	काजै	कीजै
७	१८	लीजै	लाजै
८	१	साथ	साध

(१) कलजुग। (२) समय।

शुद्धी-पत्र

पृष्ठ नं०	पंक्ति नं०	अशुद्ध	शुद्ध
८	७	भाक्त	भक्ति
८	१७	पावैं	जावै
८	१८	जीय	जीव
८	१८	मासैं	भासैं
१२	४	न	ना
१३	२	का	की
१४	१६	घन	धन
१५	९	क	के
१६	१	पगै	पगे
१६	५	तज	तजैं
१७	१८	अपनो	अपना
२०	१८	सहजा	सहजो
२२	२०	जहर	लहर
२३	६	को	की
२३	२३	मात	माता
२४	२०	सहसो	सहजो
२९	३	आगे	आगू
३३	१२	टूट	टूटै
३४	१५	मुल	मुख
३६	८	घूमन	घूमत
३६	२१	सो	हो
३८	१७	सँजोग	सँजो
३९	२	नहाँ	नहीं
३९	१३	भेष	भेस
४०	५	जनके	जाके
४२	१८	सिचार	विचार
४२	१९	अस्तुत	अस्तुति
४२	१९	बढ़्यौ	बाढ्यौ
४३	२	की	जो
४३	१२	ठीका	टीका
४३	१५	न	ना
४४	१८	लागौ	लागै

संतबानी की कुल पुस्तकों का सूचीपत्र

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का अनुराग सागर	१।-)
कबीर साहिब का बीजक	१)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़्ते और झूलने	॥)
कबीर साहिब की अखरावती	।)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥।)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१॥)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१॥)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१॥।)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	२)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	२)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	२)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	१॥≡)
सुन्दर बिलास	१।≡)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	१)
पलटू साहिब भाग २—रेख़्ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया	१)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	१)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	१-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	१-)
दूलन दास जी की बानी	।=)